

FAIZANE MOULANA MUHAMMAD ABDUSSALAM QADIRI (HINDI)

सिलसिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या के चालीसवें शैखे त़रीक़त के हालाते ज़िन्दगी

رَحْمَةُ اللهِ تَكُنْ عَلَيْهِ

# फ़ैज़ाने मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम क़ादिरि



मज़ार मौलाना  
मुहम्मद हश्मत अली ख़ान



मज़ारे  
आ'ला हज़रत



ख़ानकाहे  
मारेहरा शरीफ़



(दु'आ इस्लामी)  
जो आपकी मर्दानगी और इस्लाम को बढ़ावा देता है

आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची)



DAWAT-E-ISLAMI

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

## किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَلِنُشْرَ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! غَرْزُكَل हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(المُسْتَطَرَف ج ١ ص ٣٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखिर एक-एक बार दुरूद शरीफ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना

बकीअ

व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



## क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुनिया में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساکر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

## किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मुक्ताबतुल मदीना से रूजूअ फ़रमाइये ।

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

## तआरुफ़ मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ

ने येह रिसाला “फैजाते मौलाना मुहम्मद अब्दुससलाम कादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه” ‘उर्दू’ ज़बान में पेश किया है और मजलिसे तराजिम ने इस रिसाले का ‘हिन्दी’ रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [भाषांतर (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर (Transliteration) या’नी बोली तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी की गई है] और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी-बेशी या ग़लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़हा व सतर नम्बर) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।  
ख़ास नोट : इस्लामी बहनों को डायरेक्ट राबिता करने की इजाज़त नहीं है।

### उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त का लीपियांतर ख़ाक़

थ = ث	त = ت	फ = ف	प = پ	भ = ب	ब = ب	अ = ا
छ = چ	च = ج	झ = ز	ज = ج	स = س	ठ = ٹ	ट = ٹ
ज़ = ز	ढ = ڈ	ड = ڈ	ध = د	द = د	ख = خ	ह = ح
श = ش	स = س	ज़ = ز	ज़ = ز	ढ = ڈ	ड़ = ڈ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ = ع	ज़ = ظ	त = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گ	ग = گ	ख = ک	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ू = و	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

✍ :- राबिता :- ✍

मजलिसे तराजिम (दा’वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, कासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड,

बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा’वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ  
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

## फैज़ाने मौलाना मुहम्मद अब्दुससलाम कादिरि

### दुरूद शरीफ की फज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है : **اَللّٰهُ** کے رسول صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : बरोजे क़ियामत लोगों में मेरे क़रीब तर वोह होगा, जिस ने मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे ।<sup>(1)</sup>

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّد

### उम्मत की खैर ख़्वाही में मसलफ़

ग़ालिबन बीस पच्चीस बरस पहले की बात है कि तल्मीज़ व ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत शेर बेशए सुन्नत हज़रते अल्लामा हशमत अली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के एक अ़ालिमे दीन मुरीद व ख़लीफ़ा नेकी की दा'वत अ़ाम करने के लिये कोलम्बो (सीलंका) में क़ियाम पज़ीर थे । जिन्हें आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى की निस्बत से “क़मरे रज़ा” (या'नी रज़ा के चांद) का लक़ब हासिल था । **اَللّٰهُ** ने उन्हें कई ख़ूबियों से नवाज़ा था जिन में से एक येह भी थी कि बीमार व परेशान आप की बारगाह में हाज़िर होते आप ता'वीज़ात अ़ता फ़रमाते **اَلलّٰهُ** उन्हें शिफ़ा अ़ता फ़रमा दिया करता था । अचानक उस अ़लाके में एक वबा फैलने लगी जिस ने रफ़ता रफ़ता अ़लाका

1 ... ترمذی، کتاب الوتر، باب ما جاء فی فضل الصلوة علی النبی، ۲/۲، حدیث: ۲۸۴

मकीनों को अपनी लपेट में लेना शुरू कर दिया। कोलम्बो में बसने वाले मुसलमान भी इस वबा की ज़द में आए। उन्होंने ने इस वबा से बचने के लिये तदाबीर कीं लेकिन खातिर ख़्वाह फ़ाइदा न हुवा। इस आलिमे दीन से लोगों की रोज़ बरोज़ बिगड़ती हालत देखी न गई, उम्मत महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महबूबत से मा'मूर दिल तड़प उठा और इन्होंने ने अपनी मसरूफ़ियात को बालाए ताक़ रखते हुवे ता'वीज़ात के ज़रीए उस वबा का रूहानी इलाज शुरू फ़रमाया। लोग इन की बारगाह में हाज़िर होते, ता'वीज़ात पाते और सिद्दहत याब हो जाते। अभी चन्द रोज़ ही गुज़रे थे कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के ता'वीज़ात की बरकत से इस वबा का खातिमा हो गया यूँ “रज़ा के चांद” की रौशनी से वबा की जुल्मत काफ़ूर हो गई।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस मुश्किल घड़ी में मुसलमानों को नफ़अ पहुंचाने वाले सिलसिलए कादिरिया रज़विया अत्तारिया के जलीलुल क़द्र बुजुर्ग ख़लीफ़ए कुत़बे मदीना क़मरे रज़ा हज़रते अल्लामा मौलाना हाफ़िज़ अबुल फ़ुकरा मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि रज़वी ज़ियाई फ़तहपुरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ थे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**नाम व नशब**

ख़लीफ़ए कुत़बे मदीना, क़मरे रज़ा हज़रते मौलाना अबुल फ़ुकरा मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि रज़वी हशमती बरकाती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की विलादत बरोज़ बुध 15 शा'बानुल मुअज़्ज़म 1343 हिजरी मुताबिक 11 मार्च 1925 ईसवी को मौज़ए कड़े मानेकपुर तहसील बन्द की ज़िलअ फ़तहपुर हस्वा (यु पी, हिन्द) में हुई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की कुन्यत “अबुल फ़ुकरा”, लक़ब “क़मरे रज़ा” है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के वालिद का

नाम अब्दुस्सुब्हान कादिरि मर्हूम है। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के वालिद सिलसिलए कादिरिया से वाबस्ता और एक हुकूमती इदारे में अफसर थे और मुलाजमत के सिलसिले में आप उम्मुल बिलाद कानपुर (यु पी, हिन्द) में मुक़ीम हो गए थे।

### ता'लीमो तश्बियत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उम्मुल बिलाद कानपुर (यु पी, हिन्द) अपनी इल्मी शानो शौकत के ए'तिबार से बहुत अहम्मियत का हामिल है। यहां के इल्मी माहोल की आबयारी के लिये मुसन्निफे इल्मुस्सीगा हज़रते अल्लामा इनायतुल्लाह काकोरवी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ तशरीफ़ लाए और फैजे अम के नाम से एक मद्रसा काइम फ़रमाया। शैखुल कुल, उस्ताजुल उलमा हज़रते अल्लामा लुतफुल्लाह अलीगढ़ी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ और इमामे उलूमे अक़िलय्या नक़िलय्या अल्लामा अहमद हसन कानपुरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इस ख़ित्ते को तदरीस का शरफ़ बख़्शा, जलीलुल क़द्र मुहद्दिस हज़रते अल्लामा वसी अहमद मुहद्दिसे सूरती رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने तलबे इल्म के लिये कानपुर का सफ़र इख़्तियार फ़रमाया। कानपुर अपनी इल्मी हैसियत की वजह से काने इल्म बन गया। हज़रते हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि रज़वी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने भी ता'लीम का आगाज़ कानपुर (हिन्द) के अलाके बाबू पुर्वा की नई मस्जिद से फ़रमाया, यहीं आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हिफ़्जे कुरआन की सआदत हासिल की। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعालَى عَلَيْهِ के इल्मी पौदे की नश्वो नुमा के लिये कानपुर की फ़ज़ा निहायत खुश गवार साबित हुई और इस पौदे को तनावर दरख़्त बनाने में अहम किरदार अदा किया।

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने मज़ीद ता'लीम के लिये लखनऊ, फ़तहपुर और जोनपुर की दर्सगाहों का रुख़ किया। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जिन

असातिजा से इल्म हासिल किया उन में तीन नाम बहुत अहम हैं और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की शख्सियत से इन्ही असातिजा के औसाफ़ झलकते हैं । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के इन असातिजा के मुख़्तसर तआरुफ़ मुलाहज़ा कीजिये :

### (1) मुफ़्ती रफ़ाक़त हुसैन कादिरि अशरफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ

मुफ़्तिये आ 'ज़म कानपुर, अमीने शरीअत, बुरहानुल असफ़िया, सुल्तानुल मुतकल्लिमीन मुफ़्ती रफ़ाक़त हुसैन कादिरि अशरफ़ी रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की विलादत 1316 हिजरी मुताबिक 1899 ईसवी को ज़िलअ मुजफ़्फ़रपुर (बिहार, हिन्द) में हुई, मद्रसए अज़ीज़िया (बिहार, हिन्द) और मद्रसए हनफ़िया (जोनपुर, हिन्द) में ज़ेरे ता'लीम रहे फिर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका, हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की शोहरत सुन कर दारुल इलूम मुईनिय्या उस्मानिय्या अजमेर शरीफ़ हज़िर हुवे और दर्सिय्यात की तक्मील फ़रमाई ।

1352 हिजरी मुताबिक 1934 ईसवी सदरुशशरीआ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के हमराह बरेली शरीफ़ तशरीफ़ लाए और दारुल इलूम मन्ज़रे इस्लाम में तदरीसी ख़िदमात अन्जाम दीं । आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ मद्रसए मुहम्मदिय्या (जाइस, ज़िलअ राए बरेली) में तक़रीबन अठ्ठारह साल ख़िदमते तदरीस अन्जाम देते रहे । 16 शव्वालुल मुकर्रम 1369 हिजरी मुताबिक 1950 ईसवी में “मद्रसए अहसनुल मदारिस क़दीम” कानपुर में सद्र मुदर्रिस की हैसियत से तशरीफ़ ले गए । जुल हिज्जा 1370 हिजरी मुताबिक 1951 ईसवी को शबीहे ग़ौसुल आ'ज़म, मुजद्दिदे सिलसिलए अशरफ़िया हज़रते सय्यिद शाह अली हुसैन अशरफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के मुरीद हुवे और सिलसिलए आलिय्या अशरफ़िया और दीगर सलासिल की ख़िलाफ़त से नवाज़े गए । 1372 हिजरी मुताबिक 1953 ईसवी को आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की फ़िक़ही

ख़िदमात के ए'तिराफ़ में उलमाए अहले सुन्नत ने “मुफ़्तिये आ'ज़म कानपुर” का अज़ीमुश्शान लक़ब दिया। 1374 हिजरी मुताबिक़ 1955 ईसवी में जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने हज़ की अदाएगी के बा'द मदीनए मुनव्वरा हाज़िरी दी, उस मौक़अ पर ही मेज़बाने मेहमानाने मदीना, कुतबे मदीना हज़रते मौलाना जि़याउद्दीन अहमद कादिरि मदनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने सनदे हदीस और इजाज़त व ख़िलाफ़त से भी नवाज़ा नीज़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को सदरुश्शरीआ मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी और हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना हामिद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ से भी ख़िलाफ़त हासिल है। जमाअते रज़ाए मुस्तफ़ा, इदारए शरीआ बिहार की सदरत और ओल इन्डिया सुन्नी जमइयतुल उलमा के सरपरस्त की हैसियत से अपनी ख़िदमात अन्जाम दीं। इन तमाम मसरूफ़िय्यात के बा वुजूद आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ कई किताबों के मुसन्निफ़ भी हैं। आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का विसाल 3 रबीउल आख़िर 1403 हिजरी मुताबिक़ 19 जनवरी 1983 ईसवी में हुआ।<sup>(1)</sup>

हज़रते हाफ़िज़ अब्दुस्सलाम रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को अमीने शरीअत हज़रते मुफ़्ती रफ़ाक़त हुसैन रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ जैसे माहिर मुदर्रिस, आ'ला तरीन निस्बतें रखने वाले रहबर, वक़्त के तकाज़ों के मुताबिक़ क़लमी जिहाद में मसरूफ़ रहने वाले अज़ीम मुसन्निफ़, मुसलमानों की क़ियादत करने वाले ज़बरदस्त रहनुमा, लोगों के शरई मसाइल हल करने वाले अज़ीम मुफ़्ती और शरीअत के अमीन की सोहबत मुयस्सर आई और अज़ीम सिफ़ात के हामिल उस्ताद ने अपने इस लाइक़ तरीन शागिर्द की इल्मी नश्वो नुमा में भरपूर किरदार अदा किया।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

①.....तज़किए जमील, स. 228, तज़किए उलमाए अहले सुन्नत, स. 91, हयाते हाफ़िज़े मिल्लत, स. 121, 124

## (2) शेर बेशए सुन्नत हज़रते अल्लामा मुहम्मद हशमत अली खां رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

शेर बेशए सुन्नत, खलीफा व तल्मीजे आ'ला हज़रत, उम्मुल मुनाजिरीन हज़रते अल्लामा मुहम्मद हशमत अली खान रज़वी लखनवी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की विलादत 1319 हिजरी मुताबिक 1901 ईसवी में लखनऊ (यु पी, हिन्द) में हुई। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान, सदरुशशरीआ मुफ़्ती अमजद अली आ'ज़मी और मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मुस्लफ़ा रज़ा खान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ के शागिर्द थे। इमाम अहमद रज़ा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ, हुज्जतुल इस्लाम हज़रते हामिद रज़ा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ और कुतबे मदीना हज़रते ज़ियाउद्दीन मदनी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से ख़िलाफ़त हासिल थी।<sup>(1)</sup>

## आ'ला हज़रत की खुशूरी करम नवाज़ी

शेर बेशए सुन्नत, हज़रते मौलाना मुहम्मद हशमत अली खान रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मन्ज़रे इस्लाम में ज़ेरे ता'लीम थे तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का ज़ियादा वक़्त इमामे अहले सुन्नत अज़ीमुल बरकत इमाम अहमद रज़ा खान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह में गुज़रता। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जब एक दुश्मने इस्लाम को मुनाजिरे में शिकस्त दी तो उस मौक़अ पर आ'ला हज़रत रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को “अबुल फ़त्ह” कुन्यत अता फ़रमाई और आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मुतअल्लिक़ तहरीर फ़रमाया : “मौलाना हशमत अली मेरा रूहानी बेटा है, इन को पांच रूपिया माहाना वज़ीफ़ा मेरी तरफ़ से हमेशा दिया जाए।” आ'ला हज़रत के विसाल के बा'द भी वज़ीफ़े का सिलसिला जारी रहा।<sup>(2)</sup> शेर बेशए सुन्नत हज़रते मौलाना हशमत

①.....मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द और इन के खुलफ़ा, स. 331

②.....मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द और इन के खुलफ़ा, स. 332, सवानहे शेर बेशए सुन्नत, स. 43

अली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को बारगाहे आ'ला हज़रत में रहने का शरफ़ हासिल रहा, सदरुल अफ़ज़िल मुफ़्ती मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी, सदरुशशरीअ मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا) वगैरा जलीलुल क़द्र असातिज़ा से फैज़ हासिल करने और इन की सोहबत से फैज़याब होने के मवाक़ेअ मुयस्सर आए जिस की बदौलत आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अज़ीम मुदर्रिस, बे मिसाल, मुफ़स्सिर, मायानाज़ मुहद्दिस और फ़काहत के आ'ला मर्तबे पर फ़ाइज़ हुवे और इन ही खुसूसिय्यात ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को “शेर बेशए सुन्नत” बना दिया था, फिर जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इल्म के प्यासे तलबा को सैराब करने के लिये तदरीस शुरूअ फ़रमाई तो उन में बातिल से टकराने और बे ख़ौफ़ो ख़तर हक़ बात कहने का ज़ब्बा बेदार फ़रमाया। आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने 8 मुहर्मुल ह़राम 1380 हिजरी मुताबिक़ 3 जुलाई 1960 ईसवी को पीलीभीत (यु पी, हिन्द) में विसाल फ़रमाया, यहीं आप का मज़ार मरजए ख़लाइक़ है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## शेर बेशए सुन्नत की ख़िदमत में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुससलाम कादिरी फ़तहपुरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को भी शेर बेशए सुन्नत हज़रते अल्लामा मुहम्मद हशमत अली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के शागिर्द और मुरीद व ख़लीफ़ा होने का ए'ज़ाज़ हासिल है, आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने शेर बेशए सुन्नत के जलीलुल क़द्र औसाफ़ अपनी ज़ात में ज़ब्ब फ़रमाए, अज़ीम मुर्शिद की नसीहतों को उसूले जिन्दगी क़रार दे कर आख़िरी दम तक इस पर क़ाइम रहे।

### (3) मुफ़्ती काजी शम्सुद्दीन अहमद जोनपुरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

ख़लीफ़ आ 'ला हज़रत, शम्सुल इलमा, हज़रते मुफ़्ती अबुल मआली शम्सुद्दीन अहमद जा'फ़री रज़वी जोनपुरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की विलादते बा सआदत 28 ज़िल हिज्जा 1322 हिजरी मुताबिक 5 मार्च 1905 ईसवी महल्ला मीर मस्त जोनपुर (यु पी, हिन्द) में हुई। आप की इब्तिदाई ता'लीमो तरबिय्यत जदे अमजद और नानाजान से जोनपुर में हुई, इस के बा'द जामिआ नईमिय्या मुरादाबाद में सदरुल अफ़ज़िल हज़रते मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ख़िदमत में हाज़िर हुवे। दारुल इलूम मुईनिय्या उस्मानिय्या में दाख़िला लिया और सदरुशशरीआ मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी और दीगर असातिजा से इलूमो फुनून हासिल करने में मसरूफ़ रहे। 1352 हिजरी में जब सदरुशशरीआ दारुल इलूम मज़हरे इस्लाम बरेली शरीफ़ आ गए तो आप भी उन के हमराह थे। उसी साल आप दारुल इलूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ से फ़ारिगुत्तहसील हुवे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मा'कूलात व मन्कूलात में माहिर और फ़िक़ह पर अच्छी नज़र रखते थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने दस साल की उम्र में आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى से बैअत का शरफ़ हासिल किया और बा'द में ख़िलाफ़त से भी नवाज़े गए। हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा ख़ान और मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने भी ख़िलाफ़त अता फ़रमाई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने तदरीस का आगाज़ दारुल इलूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ से किया। जामिआ नईमिय्या मुरादाबाद में भी तदरीस फ़रमाई। मद्रसए मन्ज़रे हक़ टांडा, मद्रसए हनफ़ी जोनपुरा और जामिआ रज़विय्या

हमीदिय्या बनारस में आप सदरुल मुदर्रीसीन रहे। आप की तस्नीफ़ कर्दा कुतुब में कानूने शरीअत को शोहरत हासिल हुई। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने यकुम मुहर्रमुल हराम 1401 हिजरी मुताबिक 9 नवम्बर 1980 ईसवी विसाल फरमाया, महल्ला मीर मस्त जोनपुर (यु पी, हिन्द) में आप का मज़ारे पुर अन्वार है।<sup>(1)</sup> हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से भी शरफ़े तलम्मुज़ हासिल है।

इन तीनों असातिज़ा (अमीने शरीअत और शेर बेशाए सुन्नत मुफ़्ती शम्सुद्दीन अहमद रज़वी (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) की सोहबत इन के चश्मए इल्म से सैराबी न सिर्फ़ इल्म और अक़ीदे की पुख़्तगी का सबब बनी बल्कि इस का बराहे रास्त असर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के रोज़ मर्ज़ा के मा'मूलात पर हुवा, परचमे इस्लाम को बुलन्द करने के लिये आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का जज़्बा बेदार करने में तीनों असातिज़ा की तरबियत का अहम हिस्सा है। असातिज़ा की शफ़क़तों और इनायतों ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बा बरकत ज़ात को मुसलमानों के लिये अज़ीम मोहसिन और ज़बरदस्त ख़ैर ख़्वाह बना दिया।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ رَجُلٍ عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदेक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो। آمِينَ بِحَمْدِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## कमर रज़ा की खुश ब्रदाएं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! दुरुस्त अमल के दुरुस्त नतीजे का नाम “कामयाबी” है। اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ رَجُلٍ عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे अपने हर हर अमल ①.....मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द और इन के खुलफ़ा, स. 434, तज़क़िए खुलफ़ाए आ'ला हज़रत स. 198, तज़क़िए उलमाए अहले सुन्नत स. 104

को हुक्मे इलाही के मुताबिक़ दुरुस्त रखते हैं। ख़शिय्यते इलाही और तक्वा इन के हर फ़ैल में नज़र आता है, इन के इन्ही दुरुस्त आ'माल के नताइज **اَبْلَاح** عَزَّوَجَلَّ की रहमत और इन्आमात की सूरत में इन पर ज़ाहिर होते हैं इसी लिये रब्बे करीम की जानिब से इन के रास्ते को सिराते मुस्तकीम (या'नी सीधा रास्ता) क़रार दिया गया है जिस को अपना कर हम दुन्या व आख़िरत में कामयाब हो सकते हैं। हज़रते मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरी रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की मुबारक ज़िन्दगी से कामयाबी का येह राज़ ज़ाहिर है, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ कई सिफ़ात के जामेअ थे जिन में से चन्द औसाफ़ वोह हैं जिन्हें हम अपनी ज़िन्दगी में नाफ़िज़ कर के दीनो दुन्या दोनों में कामयाबी पा सकते हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की चन्द खुश अदाएं मुलाहज़ा कीजिये।

### (1) मियाना रवी

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** जिस तरह क़श्ती में मा'मूली मा'मूली सूराख़ कर दिये जाएं तो उस का डूबना यकीनी है ऐसे ही ज़िन्दगी की क़श्ती बे ए'तिदाली के सूराख़ के सबब डूब जाती है, अपनी क़श्ती को ब ख़ैरो अफ़िय्यत साहिल तक पहुंचाने के लिये “मियाना रवी” अपना सब से ज़ियादा कार आमद साबित होता है। हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरी रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने अपनी पूरी ज़िन्दगी मियाना रवी और ए'तिदाल की अमली तसवीर बन कर गुज़ारी इसी लिये आप की तबीअत हुब्बे दुन्या की आफ़त से आज़ाद नज़र आती है।

### (2) नज़्मो ज़ब्ज़

**आप** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने निहायत मुनज़्ज़म अन्दाज़ में ज़िन्दगी गुज़ारी। जो वक़्त जिस काम के लिये मुक़र्रर होता उसी में सर्फ़ फ़रमाते यूं

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه की इनफिरादी इबादत, तदरीस, लोगों की खैरख्वाही के लिये दिये जाने वाले ता'वीजात, शरई मसाइल का हल, इमामत और बयानात के लिये सफ़र सब तै शूदा वक़्त पर अन्जाम पाते ।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अगर हम अपने रोज़ मर्रा के मा'मूलात का जाइज़ा लें तो हमारी परेशानियों की बुन्यादी वजह निज़ामुल औकात की बे तरतीबी क़रार पाएगी, दर अस्ल येह बे तरतीबी सुस्ती व काहिली, ला परवाही, टाल मटोल का नतीजा हुवा करती है, सुब्ह का काम शाम तक टाल कर या शाम का काम सुब्ह पर मुअख़्ख़र कर के हम अपनी सीधी राह पर चलती ज़िन्दगी को आजमाइश का शिकार बना देते हैं यूँ ग़ैर मुनज़्ज़म ज़िन्दगी बारहा दुन्या व आख़िरत में अज़ीम ख़सारे का सबब बन जाती है । अगर आप दुन्या व आख़िरत की बेहतरी की ख़ातिर अपनी ज़िन्दगी किसी निज़ामुल औकात (Time Table) के ज़रीए मुनज़्ज़म करना चाहते हैं तो रोज़ाना मदनी इन्आमात<sup>(1)</sup> का रिसाला पुर कर के हर माह के इब्तिदाई दस दिन में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, कुछ अर्से में आप खुद महसूस करेंगे कि मदनी इन्आमात पर अमल की बरकत से आप की ज़िन्दगी खुद ब खुद मुनज़्ज़म हो कर शाहराहे कामयाबी पर दौड़ रही है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

① .....अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के तरीक़े कार पर मुश्तमिल शरीअतो तरीक़त का जामेअ मजमूआ बनाम “मदनी इन्आमात” ब सूरते सुवालात अता फ़रमाया है ।

इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63 और तलबए इल्मे दीन के लिये 92, दीनी तालिबात के लिये 83 और मदनी मुन्नो और मुन्नियों के लिये 40 और खुसूसी इस्लामी भाइयों के लिये 27 मदनी इन्आमात हैं । इन पर अमल पैरा हो कर हम अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह का अज़ीम जज़्बा पा सकते हैं ।

### (3) अज़म व हौसला

च्यूंटी अपने अज़म व हौसले के बलबूते पर बड़े से बड़ा मा'रिका सर कर लेती है और उस की नन्ही मुन्नी जसामत मन्ज़िल तक पहुंचने के एहसास को किसी भी तरह कमज़ोर नहीं कर पाती जब एक च्यूंटी का येह हाल है, इन्सान के अज़म व हौसले का आलम क्या होगा ? इन्सान में मौजूद अज़म व हौसला चट्टानों से टकराने और तूफ़ानों का रुख़ मोड़ने की हिम्मत पैदा कर देता है । हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का अज़म व हौसला निहायत पुख़्ता था येही वजह है कि दीने इस्लाम की खातिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के उठने वाले क़दम न तो कभी डगमगाते और न ही पीछे हटे, इस पर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की तक्रीबन 75 सालह मुबारक हयात शाहिद है ।

### (4) क़नाअत

दुन्या में कोई भी ऐसा नहीं है कि जिसे मुश्किलात का सामना न हो, मुश्किल की कोई भी सूरत हो सकती है कभी तो आजमाइश भूक के भेस में आती है और कभी इफ़लास के लुबादे में । इन्सान को दरपेश मुश्किलात में सब से बड़ी मुश्किल रिज़क़ की तंगी है और इस मुश्किल का सामना करने का एक रास्ता “क़नाअत” है और येह तंगदस्ती के भंवर में खुद को संभालने का बेहतरीन सहारा है । जो اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى رَجُلٍ की रिज़ा पर राज़ी रहना सीख जाए और क़नाअत इख़्तियार करे उसे क़ल्बी सुकून की ने'मत नसीब होती है, वोह आजमाइशों का मुक़ाबला करने के लिये सब्र का उम्दा हथियार इस्ति'माल करता है । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की मुबारक ज़िन्दगी क़नाअत का अमली नमूना थी इसी लिये आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपनी तमाम उम्र सब्रो रिज़ा का पैकर बन कर गुज़ारी ।

### (5) मशक्कत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उमूमन कामयाबी का हुसूल बिगैर मशक्कत उठाए मुमकिन नहीं क्यूंकि कुछ पाने के लिये लगातार जिद्दो जेहद करनी पड़ती है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये कई मशक्कतें बरदाश्त कीं, आबाई अलाका छोड़ कर नेकी की दा'वत के लिये दूसरे शहर बल्कि बैरूने मुल्क सफ़र इख़्तियार किया, लोगों के इस्लाहे अक़ाइदो आ'माल की गरज़ से दूर दराज़ अलाकों में बयानात के लिये तशरीफ़ ले गए, तमाम तर मसरूफ़िय्यात के बा वुजूद ता'वीजात के ज़रीए मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही फ़रमाते रहे। ख़िदमतो इस्लाम के लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने जो मशक्कतें बरदाश्त कीं उन में हमारी आराम त़लब त़बीअत के लिये बे शुमार मदनी फूल हैं।

### (6) इख़्लास

दीनी कामों में अगर इख़्लास न हो तो वोह अमल ख़्वाह कितनी ही मशक्कत उठा कर किया गया हो اَعَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मक़बूल नहीं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की इनफ़िरादी इबादत हो या तदरीस, सफ़र हो या हज़र आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का मक़सूद रिज़ाए इलाही हुवा करता येही वज्ह है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के इख़्लास के साथ की जाने वाली दीनी ख़िदमात हमारे लिये मशअले राह हैं।

### (7) बुर्दबारी और तहम्मूल मिजाजी

अक्लमन्द आदमी शहद हासिल करने के लिये शहद के छत्ते पर लात नहीं मारता बल्कि शहद के हुसूल के लिये निहायत बुर्दबारी का मुज़ाहरा करते हुवे कोई न कोई तदबीर इख़्तियार करता है येह तो एक

दुन्यवी मुआमला है जिस में खुद को नुक़सान से बचाने और फ़वाइद पाने के लिये बुर्दबारी और तहम्मूल मिज़ाजी की इस क़दर अहम्मिय्यत है, दीने इस्लाम की तरवीजो इशाअत की कोशिश करने वाले के लिये इस वस्फ़ की अहम्मिय्यत कई गुना ज़ियादा बढ़ जाती है। हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जहां भी रहे, जिस अ़लाके में तशरीफ़ ले गए निहायत बुर्दबारी के साथ ख़न्दा पेशानी से तमाम तर आज़माइशों को बरदाश्त करते रहे और इन आज़माइशों को कभी पाउं की बेड़ियां नहीं बनाया बल्कि नेकी की दा'वत में आने वाली बड़ी से बड़ी मुश्किलात को मा'मूली कांटा समझ कर रास्ते से हटाते चले गए।

### (8) ज़ाहिरी व बातिनी सुथरा पन

हज़रते मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ सुन्नत के मुताबिक़ सुथरा और सादा लिबास ज़ेबे तन फ़रमाते। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का कई लोगों से मिलना होता आप के बातिन की चमक मिलने वालों पर भी गहरा असर छोड़ती और उन की ज़ाहिरी और बातिनी इस्लाह का सबब बनती।

### (9) पुर सुकून मिज़ाज

मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही के लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हर वक़्त तय्यार रहते, आप के पुर सुकून मिज़ाज की वजह से लोगों का आप की जानिब रुजूअ रहता और बे धड़क अपनी ज़रूरिय्यात आप से बयान कर देते।

### (10) अज़ाजिजी व इन्किशारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अब्बाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे अपनी आ'ला काबिलिय्यत और उम्दा सलाहिय्यत के फल को रहमते इलाही

समझ कर झुके रहते हैं, इस अजिजी व इन्किसारी की वजह से लोगों के दिलों में इन की महबूत डाल दी जाती है जो इन हज़रत के दुन्या से तशरीफ़ ले जाने के बा वुजूद काइमो दाइम रहती है। हज़रते मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अजिजी व इन्किसारी के पैकर थे इसी लिये आज तक लोगों के दिलों में आप की महबूत काइम है।

### (11) खुश कलामी

इन्सान के जिस्म में ज़बान वोह हिस्सा है जिस से निकलने वाले अल्फ़ाज़ फूल जैसे खुशबूदार भी होते हैं और अंगारे जैसे शो'ला बार भी, कभी येह अल्फ़ाज़ दुखी दिलों का सहारा बन जाते हैं और कभी ज़ख्मी दिलों को मज़ीद खून आलूद करने का सबब बनते हैं, चन्द जुम्ले हारी हुई बाज़ी को जीत से हमकिनार कर सकते हैं और जीती हुई जंग को हराने का सबब भी बन सकते हैं अल ग़रज़ खुश कलामी और बद कलामी बराहे रास्त मुआशरे की इस्लाह और बिगाड़ पर असर अन्दाज़ होते हैं।

हज़रते मौलाना अब्दुस्सलाम रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की गुफ़्तगू तन्ज़ व ता'ना, गीबत व चुगली वगैरा उयूब से पाक होती, हुस्ने अख़लाक़ की खुशबू से मुअत्तर अल्फ़ाज़, ख़ैरख़्वाही की मिठास से भरपूर जुम्ले परेशान दिलों के लिये तमानिय्यत, दुख्यारों के लिये सुकून और इल्म के प्यासों के लिये ठन्डे और मीठे शरबत का काम देते येही वजह है कि आप जहां गए, जितना अर्सा रहे लोगों में इल्मे दीन का शौक़ बढ़ा और इसी खुश कलामी और उम्दा अख़लाक़ की बदौलत सेंकड़ों मील तक आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के मुरीद फैलते चले गए।

## (12) इताअते शैखे तरीकत

मुर्शिद की इताअत में दुन्या व आखिरत की बे शुमार बरकतें पोशीदा हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ अहसनुल उलमा के भी खलीफा थे, बारगाहे मुर्शिद से मिलने वाले हुक्म को अपने लिये हिर्जे जां बना लेते चुनान्चे, कुम्भि अयमा (जिल्अ प्रताप गढ़, हिन्द) आने से कब्ल आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ कठमन्दू (नेपाल) में थे। अहसनुल उलमा हजरते सय्यिद शाह मुस्तफा हैदर हसन मियां कादिरी बरकाती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के हुक्म पर कुम्भि अयमा (जिल्अ प्रताप गढ़, हिन्द) में मुस्तकिल रिहाइश इख्तियार फरमाई।

## अहसनुल उलमा की दो नसीहतें

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को अहसनुल उलमा ने रुख़सत करते हुवे दो नसीहतें इरशाद फरमाई : कुम्भि अयमा में लोगों के अकाइदो आ'माल की इस्लाह के लिये आप की जरूरत है आप वहां जाइये लेकिन दो बातों का खयाल रखियेगा :

- (1) किसी को बद दुआ मत दीजियेगा।
- (2) कभी कुम्भि अयमा मत छोड़ियेगा।

मुर्शिद के फरमान के मुताबिक आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने उग्र का बक़िय्या हिस्सा भी यहीं गुज़ारा और आज इसी जगह आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का मज़ारे पुर अन्वार है।

أَحِبَّنَا فِي الدِّينِ وَالْدُنْيَا سَلَامٌ بِالسَّلَامِ

कादिरी अब्दुस्सलाम खुश अदा के वासिते

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَى مُحَمَّدٍ

## हुल्य़ा मुबारक

**अल्लाह** عزوجل के नेक बन्दों के चेहरों पर कुदरती तौर पर शराफ़त व मतानत और सन्जीदगी होती है, आंखों से शर्मों हया और ग़ैरत व हम्मियत छलकती है, इबादत के नूर और ईमानी चमक की बदौलत देखने वाले को वोह चेहरा निहायत पुर कशिश लगता है यूं खल्के खुदा **अल्लाह** عزوجل के नेक बन्दों की जानिब खिंची चली आती है। कहा जाता है चेहरा शख़्सियत का आईनादार होता है मगर ऐसे अफ़राद का रुख़े रौशन वोह आईना होता है जिन में कोई भी बदहाल अपनी बिगड़ी हुई हालत संवार सकता है। क़मरे रज़ा हज़रते अल्लामा अबुल फ़ुकरा मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का मुबारक चेहरा भी ऐसा ही था आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की आंखें बड़ी बड़ी और सियाह, बालों का रंग गहरा सुर्मई, भवें घनी और जुदा, नाक निहायत खुशनुमा और उठी हुई, रंग मुबारक सांवला और चमकदार, रुख़सार मुबारक भरे हुवे, दाढ़ी घनी और मुश्त भर थी। चेहरा मुबारक से इल्मी शानो शौकत इयां होती। आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का क़द मुबारक दरमियाना था। आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के मुबारक चेहरे से ज़ाहिर होने वाली इल्मी जलालत और इबादतो रियाज़त की कशिश लोगों को आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की जानिब ले आती।

## लिबास मुबारक

आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ सुन्नत के मुताबिक़ आधी पिन्डली तक कुर्ता व पाजामा और कभी कभी जुब्बा ज़ेबे तन फ़रमाते और कभी तहबन्द भी बांधा करते थे। आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ सुर्मई और कभी कथई इमामा शरीफ़

निहायत एहतिमाम से बांधते और सफ़ेद चादर साथ रखते । लिबास सादा मगर साफ़ सुथरा ही ज़ेबे तन फ़रमाते । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ घर में भी सादगी से रहते । लिबास, वज़अ क़अ और रहन सहन में सादगी नुमायां थी ।

## इजाज़तो ख़िलाफ़त

**मशाइख़े किराम** رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام का मा'मूल रहा है कि सलासिले तरीक़त का फैज़ान आम करने और लोगों की ज़ाहिरी व बातिनी इस्लाह के लिये अपने बा'ज मुरीदीन को इजाज़त व ख़िलाफ़त से नवाज़ते हैं ताकि चश्मए फैज़ से सैराबी का ख़्वाहिश मन्द जल्द अपनी मुराद को पहुंच सके ।

ख़िलाफ़त का अहम तरीन मन्सब जिस को सिपुर्द किया जाए उस में चार शराइत होना ज़रूरी हैं :

(1) सुन्नी सहीहुल अक़ीदा हो (2) ज़रूरी इल्म हो, इस लिये कि बे इल्म खुदा को पहचान नहीं सकता (3) फ़ासिके मो'लिन न हो (4) इजाज़त सहीह मुत्तसिल हो ।<sup>(1)</sup>

**क़मरे रज़ा** हज़रते अल्लामा मौलाना हाफ़िज़ अबुल फ़करा मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि रज़वी ज़ियाई फ़तहपुरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ में ये शराइत मौजूद थीं इसी लिये आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ख़िलाफ़त से नवाज़े गए । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को जिन बुजुर्गाने दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُتَمِّين से इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल थी, उन में से चार के मुख़्तसर हालात मुलाहज़ा कीजिये :

(1) **शेर बेशए सुन्नत हज़रते अल्लामा मुहम्मद हशमत अली ख़ान** رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

हज़रते अल्लामा मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ शेर बेशए सुन्नत हज़रते अल्लामा मुहम्मद हशमत अली ख़ान रज़वी लखनवी<sup>(2)</sup> رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ख़िदमत में हुसूले इल्मे दीन की ख़ातिर

① ..... फ़तावा रज़विय्या, 21/492

② ..... आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के हालात सफ़हा 6 पर मुलाहज़ा कीजिये ।

एक अर्सा रहे, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ही से मुरीद थे । शेर बेशए सुन्नत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की जात में मौजूद खूबियों को जांचा और तक्वा व परहेज़गारी और लोगों की खैर ख्वाही का अज़ीम जज़्बा मुलाहज़ा फ़रमा कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को ख़िलाफ़त से नवाज़ा ।

(2) मुफ़्तिये आ'जमे हिन्द हज़रते इल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

शहज़ादए आ'ला हज़रत, मरजिउल उलमा वल फुक़हा, ताजदारे अहले सुन्नत, आप़ताबे रुशदो हिदायत मुफ़्तिये आ'जमे हिन्द आलुर्रहमान अबुल बरकात मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान कादिरि रज़वी बरकाती رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की विलादते बा सआदत 2 ज़िल हिज्जा 1310 हिजरी मुताबिक़ 7 जुलाई 1893 बरोज़ जुमुआ सुब्ह के वक़्त बरेली शरीफ़ (यु पी, हिन्द) में हुई । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की विलादत से क़ब्ल आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ने येह दुआ फ़रमाई : “ऐ मालिके बे नियाज़, ऐ रब्बे करीम ! मुझे ऐसी औलाद अता फ़रमा जो अर्सए दराज़ तक तेरे दीन और तेरे बन्दों की खिदमत करे ।” जो शरफ़े क़बूलिय्यत से सरफ़राज़ हुई । विलादत से क़ब्ल ही सय्यिदुल मशाइख़, हज़रते सय्यिद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बा'द नमाज़े फ़त्र मुसल्ले पर बैठे बैठे आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ के नूरे नज़र, लख़्ते जिगर आलुर्रहमान और मुस्तक़िबल के मुफ़्तिये आ'जम के लिये इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को अपना जुब्बा व इमामा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : “मेरी येह अमानत आप के सिपुर्द है जब वोह बच्चा इस का मुतहम्मिल हो जाए तो उसे दे दें ।” 25 जुमादिस्सानी 1311 हिजरी को छे माह तीन दिन की उम्र में सय्यिदुल मशाइख़ हज़रते शाह अबुल हुसैन नूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى

ने दाखिले सिलसिला फ़रमाया और तमाम सलासिल की इजाज़त व ख़िलाफ़त अता फ़रमाई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने वालिदे बुजुर्गवार आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान, बड़े भाई हुज्जतुल इस्लाम हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद हामिद रज़ा ख़ान, उस्ताजुल असातिज़ा अल्लामा शाह रहूम इलाही मंगलोरी, शैखुल उलमा अल्लामा शाह सय्यिद बशीर अहमद अलीगढ़ी और शम्सुल उलमा अल्लामा जुहूरुल हुसैन फ़ारूकी रामपुरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ वग़ैरा मशाहीर से इल्मे दीन हासिल करने का शरफ़ हासिल किया। अठ्ठारह साल की उम्र में 1328 हिजरी मुताबिक़ 1910 ईसवी को असातिज़ा किराम की शफ़क़तों और आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की नज़रे इनायत से जुम्ला उलूमो फुनून, मन्कूलात व मा'कूलात पर उबूर हासिल कर के मर्कज़े अहले सुन्नत दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ से तक्मील व फ़राग़त पाई। जुम्ला उलूम से फ़राग़त के बा'द 1328 हिजरी में ज़ामिआ रज़विय्या मन्ज़रे इस्लाम में तदरीस का आगाज़ फ़रमाया यहां तलबाए किराम को इल्मे दीन के नूर से मुनव्वर फ़रमाया, इन की किरदार साज़ी व हुस्ने तरबिय्यत का कामिल एहतिमाम फ़रमाया। इस के इलावा आप ने ज़ामिआ रज़विय्या मज़हरे इस्लाम में भी तदरीस के फ़राइज़ सर अन्जाम दिये, दारुल इफ़ता की अज़ीम ज़िम्मेदारी भी आप ने संभाल रखी थी, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की हयाते ज़ाहिरी में 1328 हिजरी से 1340 हिजरी तक फ़तावा लिखे और आ'ला हज़रत रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के विसाल के बा'द 1395 हिजरी तक फ़तवा नवेसी की ख़िदमत सर अन्जाम दी। मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के पास अरब, अफ़्रीका, मॉरेशिस, इंग्लेन्ड, अमरीका, मलेशिया, बंगलादेश और पाकिस्तान वग़ैरा से इस्तिफ़ता आते और आप उन के जवाबात तहरीर फ़रमाते। आ'ला हज़रत रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को

25 सलासिले औलिया, कुरआन व सलासिले हदीस की इजाज़त अता फ़रमाई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की दीनी ख़िदमात और इल्मी मक़ाम के बाइस आप की शोहरत सिर्फ़ बर्रे सगीर तक महदूद न रही बल्कि आलमे इस्लाम के उलमा व मशाइख़े किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام आप को क़द्र की निगाह से देखते और आप की दीनी ख़िदमात का ए'तिराफ़ करते चुनान्चे, जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ तीसरी मरतबा सफ़रे हज़ पर रवाना हुवे तो मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के सेंकड़ों अफ़राद मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के दस्ते मुबारक पर बैअत हुवे और बड़े बड़े उलमा व मशाइख़ ने शरफ़े तलम्मुज़ हासिल किया। तमाम उम्र निहायत तन देही व जांफ़िशानी से दीनी, इल्मी, तस्नीफी ख़िदमात सर अन्जाम देने के बा'द 92 साल की उम्र में 14 मुहर्रमुल हराम 1402 हिजरी मुताबिक़ 13 नवम्बर 1981 ईसवी को कलिमए तय्यिबा का विर्द करते हुवे येह आफ़ताबे इल्मो हिक़मत गुरुब हो गया। अगले रोज़ नमाज़े जुमुआ के बा'द आप की नमाज़े जनाज़ा अदा की गई। नमाज़े जनाज़ा में तक़रीबन 25 लाख अफ़राद का ठाठें मारता समन्दर था जो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की मक्बूलिय्यत, शोहरत व जलालत का मुंह बोलता सुबूत है।<sup>(1)</sup> मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ से भी हज़रते हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को ख़िलाफ़त हासिल थी।

(3) अहसनुल उलमा सय्यिद मुस्तफ़ा हैदर हसन मियां कादिरी बरकाती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ

ताजदारे मस्नदे गौसिय्या बरकातिय्या, शैखुल मशाइख़, जैनुल अस्फ़िया, अहसनुल उलमा हज़रते मौलाना हाफ़िज़ क़ारी सय्यिद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन मियां कादिरी बरकाती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की विलादत 10 शा'बानुल मुअज़्ज़म 1345 हिजरी मुताबिक़ 13 फ़रवरी 1927 ईसवी

①.....मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द और इन के ख़ुलफ़ा, स. 19-102 मुल्तक़तून।

मारेहरा शरीफ (यु पी, हिन्द) में हुई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इब्तिदाई ता'लीम अपनी वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهَا से हासिल फ़रमाई, सात साल नौ माह की उम्र में हिफ्ज़े कुरआन की सआदत हासिल फ़रमाई। तलमीज़ व ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, शेर बेशए सुन्नत हज़रते मौलाना हशमत अली ख़ान रज़वी, शैख़ुल उलमा हज़रते अल्लामा गुलाम जीलानी आ'ज़मी, तल्मीजे सदरुशशरीआ ख़लीले मिल्लत हज़रते मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद ख़लील ख़ान बरकाती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ आप के असातिज़ा में शामिल हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के मामूँजान ताजुल उलमा हज़रते मौलाना सय्यिद औलादे रसूल मुहम्मद मियां कादिरी बरकाती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने आप की ता'लीमो तरबियत पर खुसूसी तवज्जोह दी। अहसनुल उलमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की गुफ़्तगू इल्मो हिकमत से भरपूर हुवा करती, हर एक से उस के फ़न के ए'तिबार से गुफ़्तगू फ़रमाते। मेहमान नवाज़ी बे मिसाल थी, तलबा पर आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बे मिसाल शफ़क़त फ़रमाते, अहले इल्म व अरबाबे क़लम की ख़ूब हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाते। आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को ताजुल उलमा हज़रते मौलाना सय्यिद औलादे रसूल मुहम्मद मियां कादिरी बरकाती रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से ख़िलाफ़त हासिल थी। ताजुल उलमा रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हज़रते मौलाना सय्यिद औलादे रसूल मुहम्मद मियां कादिरी बरकाती रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने 22 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1363 हिजरी को अपना जा नशीन मुक़र्रर फ़रमाया।

अहसनुल उलमा हज़रते मौलाना हाफ़िज़ क़ारी सय्यिद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन कादिरी बरकाती रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अस्लाफ़ की सच्ची यादगार, मैदाने त़रीक़त के शहसुवार, ख़ानकाहे कादिरिय्या का वक़ार और शरीअतो त़रीक़त के ज़ामेअ थे। आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अपने मुरीदीन के अक़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बातिन की इस्लाह फ़रमाते, सुन्नतों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की तल्कीन फ़रमाते, आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की मुबारक ज़ात

मीनारए हिदायत थी। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के मुरीदीन पाको हिन्द के इलावा बंगलादेश, नेपाल, जापान, अमेरीका, साऊथ अफ्रीका में हज़ारों की ता'दाद में मौजूद हैं।<sup>(1)</sup> आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सिलसिलए बरकातिया का फैज़ान आम करने के लिये कई उलमाए किराम को ख़िलाफ़त अता फ़रमाई। क़मरे रज़ा हज़रते हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को 7 रजबुल मुरज्जब, 1363 हिजरी मुताबिक 29 जून 1944 ईसवी बरोज़ जुमा'रात को अस्स व मग़रिब के माबैन ख़िलाफ़त से नवाज़ा। अहसनुल उलमा हज़रते मौलाना हाफ़िज़ क़ारी सय्यिद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन मियां कादिरि बरकाती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जिस ख़ूब सूरत अन्दाज़ में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को ख़िलाफ़त अता फ़रमाई और नसीहतों के मदनी फूल अता फ़रमाए इसे जानने के लिये अहसनुल उलमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की तहरीर का कुछ हिस्सा मुलाहज़ा कीजिये :

میں سयّید حسن میاں کا دیری برکاتی کاسیمی مارےھر وی علیٰ عنہ رؤیہ الجلی کہتا ہوں کہ جب میں نے برادر م (یا'نی اپنے بھائی) ہافیز ابّو سّلام ساہیب قدس سرّہ کا دیری برکاتی رجبی کو اپنے آباؤ کرام قدس سرّہ کے مچّھے سنیئے سہیّہ یا'نی مچّھے اسلام پر متسلّط، مچّھے اھلے سنیّت کا دلدادہ دھّھا نیّہ ان کی پشانی پر سیتارے عکّبال و ہدایت بھی (دھّھا) ان کی جُمّلا عجاّات سلاسلے کا دیریّیا برکاتیّیا و سلسلسلے جھّھ سلسلسلے چشیتیا و سحر و دّیا و نکّش و بندّیا جّدیّا و کّدیّما و سلسلسلے منامیّیا و بدّیّیا مداریّیا و دّسّے اور سلاسل کی جو مژّھ کو ہّڑتے ہّّیّے خاتیم اکابیرے مارےھرا مولانا مولوی ہافیز کّاری موفّی اّللّاما ابوّل

1.....सय्यिदै नम्बर, माहनामा अशरफ़िय्या, स. 935, 715, 727

कासिम मुहम्मद इस्माईल हसनूल मुलक्कब ब शाहजी ताजदारे मसन्दे गौसिय्या बरकातिय्या تَعَالَى عَنْهُ وَأَرْضَاهُ عَنَّا وَرَضَى عَنْهُمْ آمِينَ يَا رَبُّ الْعَالَمِينَ, हज़रते मौलाना क़ारी मुफ़्ती सय्यिद अहमद मियां साहिब क़िब्ला क़ादिरि बरकाती क़ासिमी मारेहरवी अफ़्सा अलिय्या क़ादिरिय्या बरकातिय्या आले अहमदिय्या क़ासिमिय्या व हज़रते शेर बेशए अहले सुन्नत मज़हरे आ'ला हज़रत, माहिये कुफ़्रे बिदअत, सर शिकने मुब्तदिईन व मुर्तदीन साया अफ़ग़न बर मोमिनीन व मुस्लिमीन मौलाना मुफ़्ती अल्लामा मुनाज़िरे आ'ज़म उबैदुर्रज़ा हशमत अली ख़ान साहिब क़िब्ला क़ादिरि बरकाती रज़वी पीलीभीती से हासिल हैं और जुम्ला वोह औरादो अज़कार, अश्ग़ाल वादिइय्या व तिलिस्माते ख़ानदानी जो ख़ानवादए बरकातिय्या की अजल किताबों मिस्ल काशिफ़ुल अस्तारो बयाज़ आले अहमद व सब्ब सनाबिल व सिराजुल अवारिफ़ व चहार अन्वाअ वग़ैरा में मुन्दरिज हैं नीज़ बा'ज़ उन हज़रात से इजाज़त हासिल हैं सब की अज़ीज़ मौसूफ़ को इजाज़त देता हूँ। अगर इन से कोई शख्स किसी भी सिलसिले में बैअत होना चाहे बैअत लें और अगर कोई किसी चीज़ की इजाज़त त़लब करे तो दें। मेरी वसिय्यत येह है कि अज़ीज़ मौसूफ़

(1) हमेशा हमेशा मेरे आबाए किराम قُلُوبُكُمْ لَنَا رُفَعُ के सच्चे और सहीह व महबूब व दिल पसन्द मज़हब या'नी दीने इस्लाम मज़हबे अहले सुन्नत पर बहुत सख़्ती और तसल्लुब व मज़बूती और पुख़्तगी से काइम रहें और बिला ख़ौफ़े लौमतुल अइम (या'नी मलामत करने वाले की मलामत का ख़ौफ़ किये बिग़ैर) हक़ बात ज़बान पर जारी करें।

(2) अपनी सूरत व सीरत हत्तल इमकान बुजुर्गों से मिलाने की कोशिश करें और अदइय्यए ख़ैर (या'नी नेक दुआओं) में इस कमतरीन को भी याद रखें। **अब्बाह** तअ़ाला नेक तौफ़ीक़ दे।

हुजूर अहसनुल उलमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का विसाल 15 रबीउल आखिर 1416 हिजरी मुताबिक 11 सितम्बर 1995 ईसवी को तकरीबन 68 साल की उम्र में हुवा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का मज़ारे पुर अन्वार खानकाहे आलिय्या बरकातिय्या मारेहरा शरीफ (यु पी, हिन्द) में ज़ियारत गाहे खासो आम है।

#### (4) कुतुबे मदीना हज़रते मौलाना ज़ियाउद्दीन अहमद कादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

कुतुबे मदीना, शैखुल अरबे वल अज़म, खलीफ़े आ'ला हज़रत, शैखुल फ़ज़ीलत, हज़रते मौलाना ज़ियाउद्दीन अहमद कादिरी मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की विलादत रबीउल अव्वल शरीफ़ बरोज़ पीर 1294 हिजरी मुताबिक 1877 ईसवी ज़ियाकोट (सियालकोट) में हुई। आप ने इब्तिदाई ता'लीम घर पर हासिल करने के बा'द ज़ियाकोट (सियालकोट) मर्कजुल औलिया लाहौर और देहली में मुख्तलिफ़ असातिज़ा से इक़तिसाबे फ़ैज़ किया फिर पीलीभीत (यु पी, हिन्द) में हज़रते अल्लामा मौलाना वसी अहमद मुहद्दिसे सूरती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ख़िदमत में तकरीबन चार साल रह कर उलूमे दीनिय्या हासिल किये और दौरए हदीस के बा'द सनदे फ़राग़त हासिल की। आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के दस्ते करामत से आप की दस्तार बन्दी हुई। आप ने 1312 हिजरी में आ'ला हज़रत से शरफ़े बैअत हासिल किया और सिर्फ़ 18 साल की उम्र में सनदे ख़िलाफ़त पाई। नीज़ अरबो अज़म के दीगर मुतअद्दिद मशाहीर व शूयूख़ से भी आप को ख़िलाफ़त का शरफ़ हासिल था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ऐसे आफ़ताबे अहले सुन्नत थे जिस की नूरी शुआओं से अरबो अज़म रौशन हुवे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने पूरी ज़िन्दगी दीने मतीन की तब्लीग़ के लिये वक्फ़ कर रखी थी, आप ने 1327 हिजरी मुताबिक 1910 ईसवी से ले कर ता दमे विसाल तकरीबन 75 साल मर्कज़े आशिक़ाने मुस्तफ़ा मदीनए मुनव्वरा زَادَهُ اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में रहते हुवे मस्लके हक्का अहले सुन्नत की

इशाअत की। सारा ही साल रोज़ाना रात को आप के आस्तानए अलिय्या पर महफ़िले मीलाद का इनइकाद होता। जिस में मदनी, तुर्की, पाकिस्तानी, हिन्दुस्तानी, शामी, मिस्री, अफ़्रीकी, सूडानी और दुन्या भर से आए हुवे ज़ाइरीन शिर्कत करते। मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने तीन दफ़्आ हज़ की सआदत पाई। आप भी इस मुबारक महफ़िल में शरीक होते थे। इसी दौरान आप को कुतबे मदीना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से ख़िलाफ़त और वकालत हासिल हुई। दुन्या भर में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के बे शुमार खुलफ़ा और मुरीदीन दीने मतीन की ख़िदमत में मसरूफ़े अमल हैं।<sup>(1)</sup> कुतबे मदीना ने 106 साल की उम्र में 4 जुल हिज्जतुल हराम 1401 हिजरी मुताबिक़ यकुम अक्टूबर 1981 ईसवी बरोज़ जुमुआ विसाल फ़रमाया और जन्तुल बकीअ में ख़ातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज्जह्रा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के मुबारक क़दमों में आराम फ़रमा हैं।<sup>(2)</sup>

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

## ख़िदमात

इल्मे दीन के दौरान ही आप ने कानपुर में इमामत के ज़रीए ख़िदमते दीन का आगाज़ फ़रमाया। बा'दे तक्मील येह सिलसिला जारी रहा फिर आप नेपाल के दारुल हुकूमत खटमन्डू में तशरीफ़ ले गए फिर 1384 हिजरी मुताबिक़ 1964 ईसवी में अहसनुल उलमा हज़रत सय्यिद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन मियां कादिरि बरकाती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के हुक्म से

①.....इन में से आप के मुरीदे कामिल अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रजवी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ की शख्सियत किसी तआरुफ़ की मोहताज नहीं। आप ने ग़लिबन 1397 हिजरी मुताबिक़ 1977 ईसवी में ब ज़रीअए मक्तूब बैअत का शरफ़ हासिल किया। (सय्यिदी कुतबे मदीना, स. 3-4)

②.....सय्यिदी ज़ियाउद्दीन अहमद अल कादिरि, 1/164-167, 2/70, सय्यिदी कुतबे मदीना, स. 3, 4, 7, 8, 11

रियासत उत्तर प्रदेश के ज़िल्लअ प्रताप गढ़ के मौज़ए कुम्भ अयमा तशरीफ़ लाए जहां आप ने ता'लीमे कुरआन और दर्से निज़ामी की इब्तिदाई कुतुब पढ़ाने का सिलसिला शुरूअ फ़रमाया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का सिलसिला तरीक़त काफ़ी वसीअ था। कोलम्बो जाते रहते थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने कोलम्बो की मर्कज़ी जामेअ मस्जिद मेमन में कई मरतबा नमाज़े तरावीह पढ़ाई। ख़ल्के कसीर ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ से फैज़ पाया।

### बद मज़हबों को सख़्त ना पसन्द फ़रमाते

क़मरे रज़ा हज़रते हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि हशमती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ अपने पीरो मुर्शिद हज़रते अल्लामा हशमत अली ख़ान रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की तरह बद मज़हबों को सख़्त ना पसन्द फ़रमाते, अगर कोई बद अक़ीदा मस्जिद में आता तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ मस्जिद का वोह मक़ाम धुलवाते और अपने इस अमल से लोगों को येह ज़ेहन नशीन कराते कि ज़ाहिरी नजासत से ज़ियादा हलाकत ख़ैज़ बातिनी नजासत (या'नी बद अक़ीदगी) है अगर इस का फ़ौरन इज़ाला न किया जाए तो येह हलाकत ख़ैज़ी ईमान के लुट जाने का सबब बनेगी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमान की सब से कीमती चीज़ उस का ईमान है और ईमान की सलामती अक़ीदे की दुरुस्ती पर मौकूफ़ है येही वजह है कि बुजुर्गानि दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ बद अक़ीदा की सोहबत से बिल्कुल दूर रहते चुनान्वे,

### आयते मुबारक तक न शुनी

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के शागिर्द जलीलुल क़द्र ताबेई इमाम मुहम्मद बिन सीरीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के पास दो

बद मज़हब आए। अर्ज़ की : कुछ आयाते कलामुल्लाह आप को सुनाएं।  
 इरशाद फ़रमाया : मैं सुनना नहीं चाहता। उन्होंने ने अर्ज़ की : कुछ अहदीस सुनाएं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फिर फ़रमाया : मैं सुनना नहीं चाहता। उन्होंने ने इसरार किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सख़्त लहजे में फ़रमाया : तुम दोनों उठ जाओ या मैं उठ जाता हूँ। आख़िर वोह खाइबो खासिर (ना मुराद) हो कर चले गए। लोगों ने अर्ज़ की : ऐ इमाम ! क्या हरज था अगर वोह कुछ आयतें या हदीसों सुनाते ? इरशाद फ़रमाया : मैं ने ख़ौफ़ किया कि वोह आयात व अहदीस के साथ अपनी कुछ तावील लगाएं और वोह मेरे दिल में रह जाए तो हलाक हो जाऊँ। इस वाक़िए के तहत आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : अइम्मा को तो येह ख़ौफ़ और अब अ़वाम को येह ज़ुरअत है। देखो ! अमान की राह वोही है जो तुम्हें तुम्हारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बताई : اِيَّاكُمْ وَاِيَّاهُمْ لَا يُضِلُّوْكُمْ وَلَا يَفْتِنُوْكُمْ या'नी उन (बद मज़हबों) से दूर रहो और उन्हें अपने से दूर करो, कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें, कहीं वोह तुम्हें फ़ितने में न डाल दें। देखो ! नजात की राह वोही है जो तुम्हारे रब ने बताई : (١٨: ٢٦) وَمَا يَنْسِيْكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الدِّكْرِ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ) भूले से उन में से किसी के पास बैठ गए हो तो याद आने पर फ़ौरन खड़े हो जाओ।<sup>(1)</sup>

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

① .....फ़तावा रज़विyya, 15/106

## बद मज़हब की सोहबत बाइसे हलाकत है

हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक शख्स को नसीहत करते हुवे फ़रमाया : बद मज़हब के साथ मत बैठ क्यूंकि मुझे तुझ पर ला'नत उतरने का खौफ़ है <sup>(1)</sup> आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ही का फ़रमान है : जिस के पास कोई शख्स मश्वरा तलब करने आया और उस ने उसे किसी बद मज़हब के पास जाने का कहा तो उस ने दीने इस्लाम के साथ ग़दारी की । तुम बद मज़हबों के पास जाने से बचो क्यूंकि वोह हक़ से रोकते हैं <sup>(2)</sup>

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन अबू कसीर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : अगर किसी रास्ते पर बद मज़हब से सामना हो जाए तो वोह रास्ता छोड़ कर दूसरा रास्ता इख़्तियार करो <sup>(3)</sup>

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## सबो इस्तिक्वामत के पैकर बने रहे

जब हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कुम्भि अयमा तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ख़िदमते तदरीस का वज़ीफ़ा 50 रूपे माहाना मुक़रर हुवा लेकिन वज़ीफ़े की अदाएगी का येह सिलसिला ज़ियादा अर्से न चल सका फिर भी आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने तदरीस न छोड़ी न हिम्मत हारी और न ही किसी के आगे हाथ फैलाए बल्कि अपनी जम्अ शुदा रक़म से एक दुकान खोल ली और उस से होने वाली आमदनी से गुज़र बसर फ़रमाने लगे इस के साथ साथ तदरीस और

① ... اعتقاد اهل السنة، سیاق ما روی عن النبی فی النهی، الخ، ۱/۱۳۳

② ... اعتقاد اهل السنة، سیاق ما روی عن النبی فی النهی، الخ، ۱/۱۳۳

③ ... الشریعة لا تجری، ۱/۳۵۸

छोटी मस्जिद की इमामत का सिलसिला रखा। इस सख्त तरीन आजमाइश में भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ सब्रो इस्तिक्ामत के पैकर बने रहे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की सीरत के इस पहलू में दो मदनी फूल हैं :

(1) हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने किस क़दर सब्रो इस्तिक्ामत का मुज़ाहरा फ़रमाया कि तंगदस्ती में भी पीरो मुर्शिद की जानिब से दी गई ज़िम्मेदारी को उम्दा तरीके से पूरा फ़रमाया। अगर आजमाइश को सर पर सुवार कर लिया जाए तो वोह पहाड़ बन जाती है और अगर इस की परवा न की जाए तो इस की हैसियत रैत के ज़र्रे की मानिन्द रह जाती है, इस मुश्किल वक़्त को आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सब्रो इस्तिक्ामत की बदौलत रैत के ज़र्रे की तरह बे हकीक़त बना दिया। आजमाइश और मुसीबत से मुतअल्लिक़ हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का येह फ़रमान पेशे नज़र रखिये : “मुसीबत एक होती है लेकिन जब वोह किसी पर पहुंचे और वोह सब्र न करे तो दो मुसीबतें बन जाती हैं, एक तो वोही मुसीबत और दूसरी मुसीबत सब्र के अज़्र का जाएअ होना और येह मुसीबत पहली से बढ़ कर है।<sup>(1)</sup>

(2) अल्लाह वालों की एक बहुत ही प्यारी सिफ़त “क़नाअत” है, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ भी क़नाअत के पैकर थे। इसी लिये आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हिर्स की आलूदगी और लालच के जाल से खुद को बचाया और अपनी खुदारी पर आंच न आने दी। बुजुर्गाने दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का येही मा’मूल रहा है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना ख़लील नहवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के बारे में मन्कूल है कि हाकिमे वक़्त ने अपने बच्चों की तरबियत के लिये

1 ... دُرّة الناصحين، المجلس الخمسون في بيان صبر ايوب عليه السلام، ص 93

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह में अपना एक कासिद भेजा, कासिद ने जब हाकिमे वक्त की अर्ज आप की बारगाह में पेश की तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने खुशक रोटी निकाली और कासिद को दिखा कर फ़रमाया : जब तक येह रोटी का टुकड़ा मुयस्सर है, मुझे सुलैमान (हाकिमे वक्त) से कोई हाजत नहीं।<sup>(1)</sup>

### इस्लाम का पैकर इमाम

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कुम्भि अयमा की छोटी मस्जिद में इमामत भी फ़रमाते रहे, इमामत आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ज़िम्मेदारियों में शामिल न थी और न ही इस का कोई वजीफ़ा मुकर्रर था इस के बा वुजूद निहायत दिल जमई के साथ सारी ज़िन्दगी इमामत फ़रमाते रहे।

### कभी दिल आज़ारी नहीं की

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जब इस अलाके में तशरीफ़ लाए तो नेकी की दा'वत के इस मुबल्लिगे इस्लाम की राह में फूल नहीं बिछाए गए बल्कि सख़्त दिल आज़ार और हौसला शिकन रवय्या बरता गया, तरह तरह की तक्लीफ़ें दे कर आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को सताया गया लेकिन आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने मुआफ़ करने की सुन्नत को अमली तौर पर अपनाए रखा, हमेशा दरगुज़र से काम लिया और अज़िय्यते देने वालों के ख़िलाफ़ कभी इन्तिकामी कारवाई न फ़रमाई, हमेशा नमी नमी और सिर्फ़ नमी से काम लिया।

है फ़लाहो कामरानी नमी व आसानी में

हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

1. . . . بغية الوعاة، حرف النقاء، الخليل بن احمد، الخ، ٥٥٨/١، رقم: ١٢٠

## जिस से मिलते दिल जीत लेते

हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ छोटों पर शफ़क़त फ़रमाते, हर एक से हुस्ने अख़लाक़ से पेश आते, कभी किसी को आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से कोई शिकायत हो जाती तो खुद आगे बढ़ कर वोह शिकायत दूर फ़रमा देते। दुश्मनाने दीन के लिये सख़्ती थी लेकिन मुसलमानों के लिये नर्मी ही नर्मी थी। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जिस से मुलाक़ात फ़रमाते वोह दोबारा मिलने की ख़्वाहिश करता, जिस से मिलते दिल जीत लेते।

## बारहवीं और ग्यारहवीं मनाने का अन्दाज़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों पर शुक्र बजा लाने का एक तरीक़ा येह भी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों का यौम निहायत एहतिमाम से मनाया जाए ताकि इन की हयात के मुबारक गोशों को दुन्या भर में अ़ाम किया जा सके, अल्लाह वालों का ज़िक़्र अ़ाम होगा, इन की मुबारक सीरत पर चलना आसान होगा और इस की बरक़त से बे अ़मली का ख़ातिमा होगा और नेकियां करने का ज़ब्बा बढ़ेगा।

हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ज़शने विलादत और ग्यारहवीं शरीफ़ ख़ूब एहतिमाम से मनाते। ज़शने विलादत मनाने का सिलसिला यकुम रबीउल अव्वल से 12 रबीउल अव्वल तक जारी रहता जब कि ग्यारहवीं शरीफ़ का सिलसिला यकुम रबीउल आख़िर से 11 रबीउल आख़िर तक रहता, इस में अपनी ज़ाती रक़म से शीरीनी तक्सीम फ़रमाते।

## दिन भर के अहम तरीन मा' मूलात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काम वक़्त पर करने के लिये काम का वक़्त मुक़र्रर होना ज़रूरी है अगर काम भी ज़रूरी हो और इस का कोई

वक्त भी मुतअय्यन न हो तो उमूमन इन्सान काम का बोझ तो महसूस करता है मगर वक्त मुकर्रर न होने की वजह से बसा औकात उसे पायए तक्मील तक नहीं पहुंचा पाता और शर्मिन्दगी से दो चार होता है ।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की कामयाबी का एक राज़ येह भी है कि वोह अपने दिन रात के मा'मूलात तै शुदा वक्त के मुताबिक गुज़ारते हैं । हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ के दिन भर के मा'मूलात के लिये वक्त मुतअय्यन था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ ने अपने मा'मूलाते ज़िन्दगी को यौमिया, हफ़तावार, माहाना और सालाना ए'तिबार से तक्सीम कर रखा था । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ के चन्द मा'मूलात मुलाहज़ा कीजिये :

### जि'क़ुल्लाह का मा'मूल

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जि'क्र लाज़िम करो क्यूंकि इस में शिफ़ा है और लोगों के जि'क्र से बचो क्यूंकि इस में बीमारी है ।<sup>(1)</sup>

हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के इस फ़रमान पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ का ज़बरदस्त अमल था, जब भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ को फ़राग़त के लम्हात मिलते तो उसे ज़ाएअ करने के बजाए वोह वक्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जि'क्र में बसर फ़रमाते और मुकर्ररा औकात में कलिमा शरीफ़ का विर्द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ की ज़बान पर जारी रहता ।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ की हयाते मुबारका पर अमल करते हुवे आप अपनी

ज़बान को **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के ज़िक्र से तर रखने की निय्यत कीजिये और ज़िक्रुल्लाह का ज़ेहन बनाने की निय्यत से चन्द रिवायात मुलाहज़ा कीजिये : (1) नूर के पैकर, दो जहां के ताजवर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का ज़िक्र करने वाले और ज़िक्र न करने वाले की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दा की है।<sup>(1)</sup> (2) सरवरे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : ज़िक्रुल्लाह और नेकी की दा'वत के सिवा बनी आदम के हर कलाम के बारे में उस की पुरसिश की जाएगी।<sup>(2)</sup> (3) हज़रते सय्यिदुना मुआज़ **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि ज़िक्रुल्लाह से ज़ियादा **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के अज़ाब से बचाने वाली कोई चीज़ नहीं।<sup>(3)</sup>

### मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी का मा'मूल

**اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी हज़रते मौलाना मुफ़्ती हाफ़िज़ मुहम्मद फ़ारूक अत्तारी मदनी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** अक्सरो बेशतर अपना वक़्ते इजारा ख़त्म हो जाने के बा'द मक़तब में बैठ कर तिलावते कुरआन किया करते थे। मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक अत्तारी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** अक्सर कुरआने मजीद की तिलावत में मशगूल रहते। तर्जमए कन्जुल ईमान मअ तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान का कई मरतबा मुकम्मल मुतालआ कर चुके थे। मदनी काफ़िले में सफ़र के दौरान भी जब कभी खाना पकाने की ज़िम्मेदारी मिलती तो खाना पकाने के दौरान तिलावते कुरआन करते रहते।

1 ... بغارى، كتاب الدعوات، باب فضل ذكر الله عزوجل، ۲/۲۲۰، حديث: ۲۴۰۴

2 ... ترمذی، کتاب الزهد، باب ما جاء في حفظ اللسان، ۲/۱۸۵، حديث: ۲۴۲۰

3 ... ترمذی، کتاب الدعوات، باب ما جاء في فضل الذكر، ۵/۲۴۶، حديث: ۳۳۸۸

## ख़तमे कादिरिय्या शरीफ का मा'मूल

हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को किन्दीले नूरानी, महबूबे सुब्हानी हज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म अब्दुल कादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से बेहद महबूबत थी। चूँकि आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ सिलसिलए अलिय्या कादिरिय्या से मुन्सलिक थे इसी निस्बत के इज़हार के लिये अपने नाम के साथ कादिरि लगाते हत्ता कि आप के पासपोर्ट पर भी आप का नाम “मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि” दर्ज है। आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कसरत से ख़तमे कादिरिय्या शरीफ का एहतियाम फ़रमाते।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फैज़ाने ग़ौसुल आ'ज़म लूटने और मुश्किलात से छुटकारा पाने के लिये ख़तमे कादिरिय्या पढ़ने या पढ़वाने का मा'मूल बना लीजिये। इस की बरकतें आप खुद देखेंगे।

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने मदनी पंज सूरह में ख़तमे कादिरिय्या का येह तरीक़ा तहरीर फ़रमाया है मुलाहज़ा कीजिये :

## ख़तमे कादिरिय्या पढ़ने का तरीक़ा

(1) दुरूदे ग़ौसिय्या 111 बार पढ़ें।

اللّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ الْجُودِ وَالْكَرَمِ وَإِلَيْهِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

(2) तीसरा कलिमा 111 बार पढ़ें।

سُبْحَنَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ



(9) 111 बार

يَا صِدِّيقُ يَا عُمَرُ يَا عُثْمَانُ يَا حِذْرُ  
دَفْعُ شَرِّكَنْ خَيْرَ أَوْرُ يَا شَبِيرُ يَا شَبْرُ

(10) 111 बार

يَا حَضْرَتُ سُلْطَانِ شَيْخِ سَيِّدِ شَاةِ عَبْدِ الْقَادِرِ جِيلَانِ شَيْئًا لِلَّهِ الْبَدَدُ

(11) 111 बार

مَا هَمَّهُ مُحْتَاجُ تَوَحَّجَتْ رَوَا أَلْمَدَدُ يَا غَوْثِ اعْظَمُ سَيِّدَا

(12) 111 बार

مُشْكَلَاتِ بِي عَدَدُ دَارِئِمَا أَلْمَدَدُ يَا غَوْثِ اعْظَمُ پِيرِ مَا

(13) 111 बार

يَا حَضْرَتُ شَيْخِ مُعْنَى الدِّينِ مُشْكِلُ كُشَا بِالْخَيْرِ

(14) 111 बार

إِمْدَادُ كُنْ إِمْدَادُ كُنْ أَرْبُدِ غَمُّ آزَادُ كُنْ  
دَرْدِئِنْ وَدُنْيَا شَادُ كُنْ يَا غَوْثِ اعْظَمُ دَسْتِغِيثِرُ

(15) 111 बार

يَا حَضْرَتُ غَوْثِ اعْثْنَا بِإِذْنِ اللَّهِ تَعَالَى

(16) 111 बार

خُذِي يَاشَاهُ جِيلَانُ خُذِي شَيْئًا لِلَّهِ أَنْتَ نُورٌ أَحَدِي

(17) 111 बार

طَفِيلِ حَضَرَتْ دَسْتِغِيرُ دُشْنِ هُوَ زَيْر

(18) सूरा यासीन शरीफ़

(19) कसीदए गौसिय्या

(20) दुरूदे गौसिय्या ।<sup>(1)</sup>

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**ना'त ख़्वानी का मा'मूल**

ना'त ख़्वानी इश्के रसूल में इज़ाफ़े का सबब है इसी लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ नबिये रहमत, शफीए उम्मत وَالِهِمُ وَسَلَّمَ की ना'तें झूम झूम कर पढ़ा करते और सफ़रो हज़र में ना'त ख़्वानी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के मा'मूलात का अहम हिस्सा था ।

**मुतालए का मा'मूल**

मुतालआ इल्म में तरक्की और अमल में इज़ाफ़े का सबब है, साबिका मा'लूमात को मज़ीद बढ़ाने और नई मा'लूमात में इज़ाफ़े के लिये मुतालआ रीढ़ की हड्डी की हैसियत रखता है । मुतालए ही की बरकत से न सिर्फ़ ज़ाती सलाहियतों में इज़ाफ़ा होता है बल्कि इस के फ़वाइद दूसरों

① .....मदनी पंजसूरह, स. 265 ।

को भी पहुंचते हैं और इल्म में इजाफ़े की बरकत से अमल का ज़ेहन भी बनता है येही इल्म का तकाज़ा है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का फ़रमान है : ऐ लोगो ! इल्म हासिल करो पस जो इल्म हासिल करे उसे चाहिये कि (इल्म पर) अमल भी करे।<sup>(1)</sup> दीगर बुजुर्गाने दीन की तरह हज़रते मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को भी बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त की जानिब से मुतालए का बे पनाह शौक़ अता हुवा था इसी लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कभी तो सारी सारी रात मुतालआ फ़रमाते रहते और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मुतालए से हासिल होने वाले मदनी फूलों को बयानात के ज़रीए दूसरों तक पहुंचाते ।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** येह शिकायत आम है कि “मुतालए के लिये वक़्त नहीं मिलता ।” दर अस्ल दिन भर के बे तरतीब मा’मूलात और फुज़ूलिय्यात में सर्फ़ किये जाने वाले औकात के सबब येह शिकायत पैदा होती है । मुतालए पर इस्तिक्ामत पाने के लिये चन्द मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं :

- (1) सुब्ह से ले कर रात तक के मा’मूलात का वक़्त मुतअय्यन कीजिये और इसी मुतअय्यन वक़्त में कामों को अन्जाम देने की कोशिश कीजिये ।
- (2) बुजुर्गाने दीन के जौके मुतालए को पेशे नज़र रखिये, मुतालए का शौक़ बढ़ाने और इस पर इस्तिक्ामत पाने के लिये बुजुर्गाने दीन का तर्जे अमल मुलाहज़ा कीजिये :

⇒ हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मेरे चालीस साल इस तरह गुज़रे हैं कि सोते जागते मेरे सीने पर किताब रहती है ।<sup>(1)</sup>

⇒ मुहद्दिसे आ'ज़मे पाकिस्तान हज़रते मौलाना सरदार अहमद क़ादिरि चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ से मुतअल्लिक़ मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं मौलाना सरदार अहमद को जब भी देखता, पढ़ते देखता । मद्रसे में, क़ियामगाह पर हत्ता कि जब मस्जिद में आते तो भी किताब हाथ में होती । अगर जमाअत में ताख़ीर होती तो बजाए दीगर अज़कारो औराद के मुत़ालए में मसरूफ़ हो जाते ।<sup>(2)</sup>

(3) अपने मुत़ालए को यौमिय्या, माहाना और सालाना ए'तिबार से तक्सीम कीजिये और इस पर इस्तिक़्ामत हासिल करने के लिये मदनी इन्आमात का रिसाला पुर करने की आदत बना लीजिये ।

(4) याद रखिये ! मोबाइल, इन्टरनेट जैसी जदीद ईजादात समन्दर की मानिन्द हैं और इन में बे पनाह मशगूलिय्यत डूबने का सबब बन सकती है लिहाज़ा इन चीज़ों को ज़रूरत के मुत़ाबिक़ ही इस्ति'माल कीजिये, आप का बहुत सारा वक़्त बचेगा जिसे मुत़ालए में इस्ति'माल करना मुमकिन होगा ।

(5) दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे माहोल से वाबस्ता हो जाइये इस की बरकत से नेकियों की सोहबत मुयस्सर आएगी और वक़्त जैसी अज़ीम ने'मत को फ़र्ज़ इलूम के मुत़ालए में सर्फ़ करने का मौक़अ हाथ आएगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

1 ... جامع بيان العلم، باب فضل النظر في الكتب - الخ، ص ۲۳۱، رقم: ۲۲۲۶

2 ..... हयाते मुहद्दिसे आ'ज़म, स. 34 ।

## वज़ाइफ़ पर मुश्तमिल रिशाला तहरीर फ़रमाया

आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने ख़ानकाहे अलिय्या क़ादिरिय्या बरकातिय्या के मशाइख़े किराम **رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام** के अमलिय्यात को 1364 हिजरी मुताबिक़ 1945 ईसवी में एक रिसाले में जम्अ फ़रमाया और इस को तारीख़ी नाम “बयाजे अमलिय्यात” से मौसूम फ़रमाया और आख़िर में येह दुआ तहरीर की : “ऐ **اَللّٰهُمَّ** ! इस पर तमाम मुसलमानों को अमल की तौफीक़ अता फ़रमा, ज़रीअए मग़फ़िरत और बाइसे ख़ैरो बरकत बना ।”

## निस्बत से महब्बत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! निस्बत की बरकत के क्या कहने ! किसी अम चीज़ को किसी अजमत वाली चीज़ से निस्बत हो जाए तो वोह हमारे लिये मुतबर्क बन जाती है मसलन ग़िलाफ़े का'बा की अजमत का'बतुल्लाह शरीफ़ से निस्बत के सबब है, मक़ामे इब्राहीम की अजमत हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह **عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** से निस्बत की बिना पर है मा'लूम हुवा कि आ'ला निस्बत से चीज़ें कीमती और बा बरकत हो जाती हैं । हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम क़ादिरि **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को भी निस्बत से बहुत महब्बत थी इसी लिये जब आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने कुम्भि अयमा में एक मद्रसा क़ाइम फ़रमाया तो उस का नाम कुतुबे मदीना हज़रते मौलाना ज़ियाउद्दीन अहमद मदनी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की निस्बत से मद्रसए ज़ियाउल उलूमुल इस्लामिय्या रखा ।

बानिये दा'वते इस्लामी अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** ने

मदीना शरीफ़ की निस्बत से तमाम मदनी मराकिज़ के नाम फैज़ाने मदीना, जामिआत के नाम जामिअतुल मदीना और 100 फ़ीसद वाहिद इस्लामी चैनल का नाम मदनी चैनल अता फ़रमाए हैं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ निस्बत की बरकत के पेशे नज़र मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों के नाम भी सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام के नामों पर रखने की तरगीब दिलाते हैं, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के इस तरह के कई मा'मूलात ही की बरकत से आज दा'वते इस्लामी में भी निस्बतों की बहारे हैं।

عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके हमारी बे हि़साब मग़फ़िरत हो। آمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

कैसे आकाओं का बन्दा हूँ रज़ा

बोल बाले मेरी सरकारों के

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

शरई मसाइल के शिलशिले में लोगों का रुजूअ

हज़रते मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को अमीने शरीअत हज़रते मौलाना मुफ़्ती रफ़ाक़त हुसैन मुज़फ़्फ़पुरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ, शेर बेशए सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद हशमत अली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ और मुफ़्ती शम्सुद्दीन अहमद जोनपुरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के ज़रीए आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान और सदरुशशरीआ मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا की फ़काहत का फैज़ान पहुंचा जिस की बरकत से शरई मसाइल के लिये लोग आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की जानिब रुख़ करते इस ए'तिबार से भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ज़ात मर्जए ख़लाइक़ थी, लोग अपने मसाइल आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह में पेश करते और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हल़ इरशाद फ़रमाते।

## बारिश बरसने लगी

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّسْوَان के मुबारक दौर से येह मा'मूल चला आ रहा है कि लोग अपनी परेशानियां ले कर सालिहीन (या'नी नेक लोगों) की बारगाह में हाज़िर होते हैं, दुआ के लिये अर्ज करते हैं और इन की बारगाह से अपने ख़ाली दामन को मुरादों से भरते हैं। कुम्भि अयमा के लोगों का मा'मूल था कि हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह में हाज़िर हो कर दुआ करवाते और दिली मुराद पाते चुनान्चे,

एक मरतबा कुम्भि अयमा में अर्सए दराज़ तक बारिशों का सिलसिला मौकूफ़ रहा जिस की वजह से सख़्त क़हूत साली हुई, क़हूत साली ने लोगों को ज़बरदस्त आजमाइश में मुब्तला कर दिया, लोग अपनी फ़रयाद ले कर हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बारगाह में हाज़िर हुवे और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से दुआ के लिये अर्ज की, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सब्र की तल्कीन फ़रमाई और ऐसे मुश्किल और नाजुक मौक़अ पर लोगों के ज़ेहन में दुआ की अहममियत रासिख़ करने के लिये येह एहतिमाम फ़रमाया कि मस्जिद के सेह्न में इल्मे दीन के त़लबा और महल्ले के लोगों को जम्अ किया और निहायत रिक्कत अंगेज़ दुआ फ़रमाई, अभी दुआ का सिलसिला जारी था कि आस्मान पर बादल छा गए और रहमते इलाही बारिश की सूरत में ख़ूब बरसी जिस से लोगों के मुरझाए दिल खिल उठे और उन के दिलों में हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की अक़ीदत मज़ीद बढ़ गई।

## अगर कोई ज़रूरत मन्द आता...

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर मुसलमान दूसरे के दुख, दर्द और तकलीफ़ का एहसास करता है और ब वक़्ते ज़रूरत

अपनी ज़ात पर तरजीह दे कर उन की मुश्किलात दूर करने और उन की दिलजूरई करने की कोशिश करता है और यूं मुआशरा हमदर्दी, खैरख्वाही जैसे औसाफ़ की बरकत से अमन का गहवारा बन जाता है।

हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ में ईसार का जज़्बा कूट कूट कर भरा हुवा था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की बारगाह में अगर कोई शख्स दामने मुराद फैलाए हुवे आता तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की मुबारक ज़बान से दिलजूरई पर मुश्तमिल कलिमात सुन कर क़ल्बी सुकून पाता और आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ इसे कुछ न कुछ अ़ता फ़रमाते वोह खुशी खुशी दामने मुराद भर कर लौट जाता।

### एक के बजाए दो ले लीजिये

अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के मुबारक मा'मूलात में हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के मुबारक वस्फ़ का नूर नज़र आता है जैसा कि एक मरतबा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ से इन के एक अज़ीज़ ने (बतौरै बरकत) आप के इस्ति'माल का अ़सा मांगा तो आप ने फ़रमाया : “एक की बजाए दो ले लीजिये।” जवाबन उन्होंने ने वाक़ेई दोनों अ़सा ले लिये। उन साहिब के बेटे ने आप से पूछा कि आप के इस्ति'माल का अ़सा कौन सा है? (ताकि एक अ़सा वापस किया जा सके) लेकिन आप ने फ़रमाया कि मैं दोनों अ़सा ले लेने की इजाज़त दे चुका हूं नीज़ मैं अपनी पसन्दीदा शै राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में खर्च करने का सवाब कमाना चाहता हूं, कुरआने पाक में है :

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** तुम हरगिज़ भलाई  
को न पहुंचोगे जब तक राहे खुदा में अपनी प्यारी चीज़ न खर्च करो ।<sup>(1)</sup>

### हाजतें पूरी कीजिये

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जब भी कोई मुसलमान हमारे पास अपनी हाजत ले कर आए तो उस की दाद रसी कर के अपनी आखिरत में आसानी का सामान कीजिये जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुदैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : जो तंगदस्त पर आसानी करेगा **اَبْوَالِه** दुन्या व आखिरत में उस पर आसानी करेगा ।<sup>(2)</sup> ज़ाहिर है कि जो शख्स बे पनाह तंगदस्ती का शिकार बेहद रंजो ग़म में गिरिफ़्तार होगा और आप ने उस की मुश्किल आसान कर दी तो वोह ज़रूर आप के लिये दुआ करेगा और दुख्यारों की दुआ क़बूल होती है जैसा कि वालिदे आ'ला हज़रत रईसुल मुतकल्लिलमीन हज़रते अल्लामा मौलाना नकी अली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَان ने अपनी किताबे बे मिसाल “अहसनुल विआइ लि आदाबिदुआ” स. 111 पर जिन लोगों की दुआएं क़बूल होती हैं उन में सब से पहले नम्बर पर लिखा है : अव्वल मुज़तर (या'नी दुख्यारा) इस के हाशिये में सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَن फ़रमाते हैं : “इस की तरफ़ या'नी दुख्यारे और लाचार व नाशाद की दुआ की क़बूलिय्यत की तरफ़ तो खुद कुरआने करीम में इरशाद मौजूद है :

1 ... प २, अल عمران: १२

2 ... मुसलम, کتاب الذکر والدعاء، باب فضل الاجتماع على تلاوة القرآن، ص १२५، حدیث: २५९۹ ملقطاً

أَمَّنْ يَجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَا

وَيَكْشِفُ السُّوءَ (پ ۲۰، النمل ۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : या वोह जो  
लाचार की सुनता है, जब उसे पुकारे  
और दूर कर देता है बुराई ।

लिहाज़ा जब भी मौक़अ मिले, तंगदस्त व मजबूर की मदद  
कीजिये और दुआएं लीजिये, दुन्या में भी बे शुमार भलाइयां नसीब होंगी  
और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की रहमत से उम्मीद है कि मज़लूम की दाद रसी  
मग़फ़िरत की खुश ख़बरी का सबब बनेगी जैसा कि एक शख़्स (ज़मानए  
गुज़श्ता में) लोगों को उधार दिया करता था, वोह अपने गुलाम से कहा  
करता : “जब किसी तंगदस्त मदयून (या’नी मकरूज़) के पास जाना उस  
को मुआफ़ कर देना इस उम्मीद पर कि खुदा हम को मुआफ़ कर दे ।” जब  
उस का इन्तिक़ाल हुवा तो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने मुआफ़ फ़रमा दिया ।<sup>(1)</sup>

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ

काबिले ता’रीफ़ शारिख़सय्यत

हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के  
एक शागिर्द ने कुछ यूं बताया : हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम  
रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इल्म के समन्दर थे । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को ता’लीमे  
कुरआन आ़म करने का इस क़दर शौक़ व ज़ब्बा था कि मग़रिब के बा’द  
बच्चों को नाज़िरा कुरआने मजीद पढ़ाया करते, बचपन में मुझे भी उन से  
पढ़ने की सआदत नसीब हुई है । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का अख़्लाक़ निहायत

1 ... بغارى، كتاب احاديث الانبياء، باب حديث الغان، ۲/۴۰، حديث: ۳۲۸۰، بهار شريعت، ۲/۲۲

उम्दा था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की तरबियत का नतीजा है कि मैं सोने से कब्ल प्यारे प्यारे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में यूँ अर्ज कर के सोता हूँ :

يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنْظِرْ حَالَنَا  
خُذْ يَدَيَّ سَهْلَ لَنَا أَشْكَالَنَا

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ वाकेई काबिले ता'रीफ़ शख़्सियत थे ।

### तदरीस श्री फ़रमाते

तदरीस के ज़रीए इल्मे दीन की ला ज़वाल दौलत, अक़ीदे व आ'माल की पुख़्तागी, अख़्लाक़ व किरदार का निखार और ज़िन्दगी और बन्दगी का सलीका नई नस्ल में मुन्तक़िल किया जाता है और इल्मे दीन की शम्अ से कई चराग़ रौशन किये जाते हैं । मुत्तक़ी, परहेज़गार और तदरीस में माहिर अल्लिमे दीन की तरबियत में रहने वाले त़लबा जिस मैदान में क़दम रखते हैं कामयाबी उन का इस्तिक्बाल करती है । हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने भी अपनी शम्ए तदरीस से कई चराग़ रौशन किये, सेंकड़ों ना तराशीदा पथ्थरों की सलाहियत को निखारा और उन्हें इल्मो फ़ज़ल का आफ़ताब बनाया, लोगों के अज़ाइम का रुख़ पलट दिया, मन्सूबों की सप्त बदल कर उन्हें दीने इस्लाम की ख़िदमत के लिये तय्यार फ़रमाया । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इख़लास पर मबनी कोशिश ही का नतीजा है कि आज कुम्भ अयमा (जिल्अ प्रताप गढ़ हिन्द) और इस के मुज़ाफ़ात में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के कई फ़ैज़ याफ़ता उलमाए किराम और हुफ़्फ़ाज़ दीने मतीन की ख़िदमत में मसरूफ़ हैं जिन में से हज़रते मौलाना ख़लील अहमद कादिरि مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي भी हैं ।

## हिन्द के मुख्तलिफ़ शहरों में सफ़र

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के मुरीदीन हिन्द के मुख्तलिफ़ शहरों में फैले हुवे थे, उन की इस्लाह और रूहानी तरबियत के लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कलकत्ता, बम्बई, काठियावाड़ और कोलम्बो वगैरा का सफ़र फ़रमाते । सिर्फ़ मुलाक़ात का सिलसिला न होता बल्कि जहां तशरीफ़ ले जाते वहां बयानात के ज़रीए लोगों के अक़ाइदो आ'माल की इस्लाह फ़रमाते ।

## तरावीह पढ़ाने के लिये बैरूने मुल्क सफ़र

الرَّحْمَنُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ रमज़ानुल मुबारक में जहां हमें बे शुमार ने'मते मुयस्सर आती हैं इन्ही में तरावीह की सुन्नत भी शामिल है और इस सुन्नत की अज़मत के क्या कहने ! **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।<sup>(1)</sup> हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बेहतरीन हाफ़िज़े कुरआन थे, हर साल तरावीह में कुरआने करीम सुनाते और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ नमाज़े तरावीह पढ़ाने के लिये कई मरतबा कोलम्बो (सीलंका) तशरीफ़ ले गए ।

## तीन तीन घण्टे बयान फ़रमाते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत का एक ज़रीआ बयानात भी हैं । अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने भी बयानात के ज़रीए

1 ... ترمذی، کتاب العلم، باب ما جاء في الاخذ بالسنة، ۳/۳۱۰، حدیث: ۲۹۸۶

नेकी की दा'वत दी। हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ सुन्नते अम्बिया को अदा करते हुवे बयानात फ़रमाते, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के बयानात में इल्मो हिक्मत के कसीर मदनी फूल होते। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के बयानात की तासीर और शोहरत का अन्दाज़ इस बात से लगाया जा सकता है कि सुनने वाले आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का बयान तीन तीन घन्टे दिलचस्पी और महविय्यत से सुनते, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के बयानात मुअस्सिर थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ज़ियादा तर औलियाए किराम की शान बयान फ़रमाते, बुजुर्गाने दीन की हयाते मुबारका को इस ख़ूब सूरत अन्दाज़ में बयान करते कि सुनने वालों के लिये आप के मल्फूज़ात इस्लाह के चराग़ बन कर उन के दिलो दिमाग़ में रौशन हो जाते।

### नमाज़े बा जमाअत से महब्बत

हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को नमाज़ से बे पनाह महब्बत थी, आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ हमेशा नमाज़े बा जमाअत अदा करने का खुसूसी एहतिमाम फ़रमाते, सफ़र में होते तब भी कोशिश फ़रमाते कि नमाज़ बा जमाअत ही अदा हो।

### अगर जमाअत फ़ौत हो जाने का नुक्शान जान लेता तो...

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّ اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : अगर नमाज़े बा जमाअत से पीछे रह जाने वाला येह जानता कि इस रह जाने वाले के लिये क्या है तो घिसटते हुवे हाज़िर होता।<sup>(1)</sup>

1 ... معجم کبیر، علی بن زید، ۲۲/۸، حدیث: ۴۸۸۶

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने से जहां आपस की महबूबत में इज़ाफ़ा होता है वहीं नमाज़ का सवाब भी कई गुना बढ़ जाता है। अहदादीसे मुबारका में जमाअत से नमाज़ पढ़ने वाले के लिये कसीर सवाब और कई इन्आमात की बिशारतें वारिद हुई हैं।

**चार फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** मुलाहज़ा कीजिये :

- (1) जिस ने कामिल वुज़ू किया, फिर फ़र्ज़ नमाज़ के लिये चला और इमाम की इक्तिदा में फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ी, उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।<sup>(1)</sup>
- (2) **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ बा जमाअत नमाज़ पढ़ने वालों को महबूब रखता है।<sup>(2)</sup>
- (3) बा जमाअत नमाज़ तन्हा नमाज़ पढ़ने से 27 दरजे अफ़ज़ल है।<sup>(3)</sup>
- (4) जब बन्दा बा जमाअत नमाज़ पढ़े फिर **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ से अपनी हाज़त का सुवाल करे तो **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ इस बात से हया फ़रमाता है कि बन्दा हाज़त पूरी होने से पहले वापस लौट जाए।<sup>(4)</sup>

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** नमाज़े बा जमाअत की इस क़दर बरकतों और फ़ज़ीलतों के बा वुजूद सुस्ती करना और जमाअत से नमाज़ न पढ़ना किस क़दर तअज़्जुब ख़ैज़ है ? मगर अफ़सोस ! आज जमाअत की परवाह नहीं की जाती, बल्कि नमाज़ भी अगर क़ज़ा हो जाए तो अफ़सोस

1 ... صحيح ابن خزيمة، كتاب الامامة في الصلاة، باب في فضل المشي الى الجماعة، 3/2، حديث: 1289

2 ... مسند احمد، مسند عبد الله بن عمر، 3/2، حديث: 5112

3 ... بغارى، كتاب الاذان، باب فضل صلاة الجماعة، 2/1، حديث: 235

4 ... حلية الاولياء، مسعرين كدام، 4/299

नहीं किया जाता मगर हमारे अस्लाफ़ की तो येह हालत थी कि अगर उन की तकबीरे ऊला कभी फ़ौत हो जाती तो उन्हें इस क़दर सदमा होता जैसे बहुत बड़ा नुक़सान हो गया हो, येह हज़रत दुन्या व माफ़ीहा (या'नी येह दुन्या और इस में जो कुछ भी है) से तकबीरे ऊला को ज़ियादा अहम समझते थे और हकीक़त भी येही है चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : मरवी है कि सलफ़े सालिहीन या'नी पुराने बुजुर्गों के नज़दीक नमाज़ की कुछ इस क़दर अहम्मियत थी कि अगर उन में से किसी की तकबीरे ऊला फ़ौत हो जाती तो तीन दिन तक इस का अफ़सोस करते रहते, और अगर किसी की कभी जमाअत फ़ौत हो जाती तो इस का सात रोज़ तक ग़म मनाते ।<sup>(1)</sup>

### मस्जिद भरो तहरीक

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** दा'वते इस्लामी सुन्नतों भरी मदनी तहरीक है और चाहती है कि किसी तरह मुसलमानों का बच्चा बच्चा पक्का नमाज़ी बन जाए । आप भी इस मदनी काम में दा'वते इस्लामी के साथ तआवुन कीजिये और खुद भी नमाज़े बा जमाअत की पाबन्दी कीजिये और दूसरों को नमाज़ी बनाने की मुहिम भी तेज़ से तेज़ तर कर दीजिये, जब भी नमाज़े बा जमाअत के लिये सूए मस्जिद जाने लगें, दूसरों को बा जमाअत नमाज़ की तरगीब दिला कर साथ लेते जाइये, अगर आप के सबब से एक भी नमाज़ी बन गया तो जब तक वोह नमाज़ें पढ़ता रहेगा उस की हर हर नमाज़ का आप को भी सवाब मिलता रहेगा वरना कम अज़ कम नेकी की दा'वत देने का सवाब तो ज़रूर हाथ आएगा । नमाज़, वुज़ू, गुस्ल के मसाइल और सुन्नतें सीखने के लिये इशा के बा'द कमो बेश 40 मिनट

1 ... مکاشفة القلوب، الباب الثانی والثلاثون فی فضل صلاة الجماعة، ص ۶۸

दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में दाखिला ले लीजिये, इस में खुद भी कुरआने करीम सीखिये और दूसरों को भी सिखाइये। आप से सीखने वाला जब तिलावत करेगा आप को भी उस की तिलावत का सवाब मिलता रहेगा। आप भी सुन्नतों पर अमल कीजिये और दूसरों को भी अमल की तरगीब दिलाइये। अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत और मदनी काफ़िलों में सुन्नतों भरे सफ़र के ज़रीए अपनी और दूसरों की इस्लाह की ज़ोरदार मुहिम चला कर मुसलमानों को “नेक” बनाने की “मशीन” बन जाइये, **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** सवाब का अम्बार लग जाएगा और दोनों जहां में बेड़ा पार होगा।

**اَمَّا بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** ने मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही और उन्हें बा जमाअत नमाज़ का आदी बनाने के अज़ीम जज़्बे के तहत इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के तरीकों पर मुश्तमिल शरीअतो तरीक़त के जामेअ मजमूए “मदनी इन्आमात” में से एक मदनी इन्आम येह भी अता फ़रमाया है कि “क्या आज आप ने पांचों नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत अदा फ़रमाई ? नीज़ हर बार किसी एक को अपने साथ मस्जिद ले जाने की कोशिश फ़रमाई ?” अगर हम में से हर एक नमाज़ी इस्लामी भाई इस मदनी इन्आम का अमिल बन जाए तो वोह दिन दूर नहीं जब हमारी मसाजिद में नमाज़ियों की बहारे आ जाएंगी। **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**

## वा'दा पूरा फ़रमाते

हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का एक वस्फ़ येह भी था कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ वा'दा पूरा फ़रमाते चुनान्चे,

## अगर वा'दा पूरा न कर सका तो....

एक मरतबा मुसलमानों के इस्लाहे अक़ाइदो आ'माल के सिलसिले में एक जल्से के इन्डक़ाद का वा'दा फ़रमा कर तारीख़ का ए'लान फ़रमाया दिया लेकिन जूँ जूँ वक़्त करीब आता जा रहा था इन्तिज़ामात की कोई सबील नज़र नहीं आ रही थी, इस सूरते हाल को देखते हुवे एक रोज़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने निहायत अफ़सुर्दगी से फ़रमाया : वा'दा ख़िलाफ़ी बहुत बड़ा गुनाह है रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुनाफ़िक़ की अ़लामत फ़रमाया है। अगर मैं जल्से के इन्डक़ाद का वा'दा पूरा न कर सका तो....” येह कहते हुवे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की आवाज़ भरी गई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की कुद़न की बरकत थी कि रुकावटें दूर हो गई, तमाम इन्तिज़ामात मुकम्मल हो गए और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ जल्सा भी बेहद कामयाब रहा।

## जन्नत की ज़मानत

सुल्ताने बह्रो बर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : “तुम मुझे 6 चीज़ों की ज़मानत दे दो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूँ (1) जब बात करो तो सच बोलो (2) वा'दा करो तो उसे पूरा करो (3) तुम्हारे पास कोई अमानत रखवाई जाए तो उसे अदा करो (4) अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो (5) अपनी निगाहें नीची रखो और (6) अपने हाथों को गुनाहों से रोके रखो।”<sup>(1)</sup>

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَنَان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : “वा'दे से मुराद

1 ... صحيح ابن حبان، كتاب البر والاحسان، باب الصدق والامر بالمع، 1/235، حديث: 241

जाइज वा'दा है वा'दे का पूरा करना ज़रूरी है। मुसलमान से वा'दा करो या काफ़िर से, अज़ीज से वा'दा करो या ग़ैर से। उस्ताज़, शैख़, नबी, **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** से किये हुवे तमाम वा'दे पूरे करो। हां ! अगर किसी से हराम काम का वा'दा किया है उसे हरगिज़ पूरा न करे हत्ता कि हराम काम की नज़्र पूरी करना (भी) हराम है।”(1)

### वा'दा किसे कहते हैं ?

लुगत में अच्छी चीज़ की उम्मीद दिलाने या बुरी चीज़ से डराने इन दोनों को वा'दा कहा जाता है। इस्तिलाह में किसी चीज़ की उम्मीद दिलाने को वा'दा कहते हैं।(2)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वा'दे से मुतअल्लिक अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** की माया नाज़ तालीफ़ ग़ीबत की तबाहकारियां से तीन मदनी फूल मुलाहज़ा कीजिये।

(1) वा'दा येह है कि किसी से बा काइदा वा'दे के तौर पर तै किया कि “फुलां काम करूंगा या फुलां काम नहीं करूंगा” अगर लफ़्ज़ “वा'दा” न कहा मगर अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ के ज़रीए अपनी बात को मुअक्कद किया या'नी इस बात की ताकीद ज़ाहिर की तब भी “वा'दा” है मसलन “मदनी काफ़िले” में सफ़र करूंगा के साथ “वा'दा करता हूं” कहा, या येह कहने के बजाए कहा : **बिल्कुल पक्की बात कह रहा हूं** या कहा : **यक़ीन मानिये**, या कहा : **बिल्कुल तै है कि**, या कहा : **नहीं नहीं आप मुतमइन**

①.....मिरआतुल मनाजीह, 6/483

②.....मिरआतुल मनाजीह, 6/488

रहे कि, या कहा : बस अब तै हो गया कि वगैरा । इस की मिसाल यूं दूँ जैसा कि “मंगनी” कि येह वा’दा है अगर्चे इस में “वा’दे” का लफ्ज़ नहीं बोला जाता मगर बा काइदा लड़की वालों से तै किया जाता है और यहां “तै करना” ही वा’दा है ।<sup>(1)</sup>

(2) बा’ज लोग येह जुम्ला बोलते हैं : “चलिये वा’दा नहीं करते तो इरादा ही कर लीजिये” हो सकता है कि इस तरह इरादा या निय्यत करवाना भी बहुत सों को गुनाहों में मुब्तला कर देता हो । जी हां, दिल में इरादा (या’नी निय्यत) न होने के बा वुजूद मसलन किसी ने कह दिया कि “मैं इरादा (या निय्यत) करता हूँ 12 माह (या 30 दिन या तीन दिन) के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा ।” तो येह सरीह (या’नी खुला) झूट है । लिहाज़ा जब भी किसी से इरादा करवाएं साथ में **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** भी कहलवा लिया करें तो अगर दिल में इरादा न भी हुवा अगला गुनाह से बच जाएगा ।<sup>(2)</sup>

(3) “कोशिश करूंगा” कहने में भी गुनाह में पड़ने का ख़तरा मौजूद है या’नी दिल में निय्यत न होने के बा वुजूद जान छुड़ाने के लिये कह दिया “कोशिश करूंगा” तो येह भी झूट है लिहाज़ा यूं कहलवाइये : “मैं **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** कोशिश करूंगा या **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने चाहा तो कोशिश करूंगा । येह जुम्ला “कोशिश करूंगा” हमारे यहां बहुत ही आम है कहने वाले को पहले अपनी निय्यत पर गौर कर लेना चाहिये । अगर “कोशिश करूंगा” कहने के साथ में **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** कहने की अ़दत पड़ गई तो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** अ़फ़िय्यत ही अ़फ़िय्यत है । **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** कहते वक़्त इस के मा’ना पर भी नज़र रखी जाए, **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** के मा’ना हैं : “**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने चाहा तो ।”

① .....गीबत की तबाहकारियां, स. 461

② .....गीबत की तबाहकारियां, स. 462

अक्सर लोग इस का तलफ़ुज़ ग़लत अदा करते हैं, सहीह अदाएगी की ख़ूब मशक़ कीजिये : اِنْ شَاءَ اللهُ

## वा'दा कैसे निभाएं ?

हम जिस मुआशरे में रहते हैं इस में तरक्की करने के लिये एक दूसरे का ए'तिमाद हासिल करना ज़रूरी है क्योंकि एक दूसरे की मुआवनत के बिगैर दुन्या में एक क़दम भी आगे बढ़ाना बेहद मुश्किल है। इस मुआवनत में मज़बूती पैदा करने के लिये यकीन दिहानी की क़दम क़दम पर ज़रूरत पड़ती है और इस यकीन दिहानी का एक ज़रीआ वा'दा भी है। वा'दा निभाने से मुतअल्लिक़ इन मदनी फूलों को अपना लिया जाए तो **اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** वा'दा ख़िलाफ़ी के गुनाह से छुटकारा नसीब होगा।

### (1) वा'दा पूरा करने के फ़ज़ाइल पेशे नज़र रखिये

वा'दा पूरा करने के बहुत से फ़ज़ाइल हैं, लिहाज़ा जितनी रिवायात ज़ेहन नशीन होंगी इतना ही इन पर अमल आसान होगा।

### (2) वा'दा ख़िलाफ़ी के दुन्यवी व अख़्शवी नुक़सानात पर ग़ौर कीजिये

वा'दा ख़िलाफ़ी मुनाफ़क़त की अलामत, **اَبْوَاه** की नाराज़ी का सबब, दुन्या में दुश्मनों का तसल्लुत और इज़्ज़त व वक़ार की बरबादी जैसी मुसीबतों और परेशानियों का बाइस है, वा'दा ख़िलाफ़ी इस क़दर आफ़तों और मुसीबतों का सबब है कि इस में मुब्तला हो कर आदमी अपनी दुन्या व आख़िरत बरबाद करता चला जाता और अपना वक़ार खो बैठता है फिर उस की बात क़ाबिले ए'तिमाद होती है न वा'दा, जिस की वजह से वोह दुन्या में तो रुस्वा होता ही है, आख़िरत में भी तरह तरह की सज़ाएं पाएगा।

### (3) वा'दा ख़िलाफ़ी से बचने के लिये मोहतात जुम्ले बोलिये

वा'दा ख़िलाफ़ी गुनाह है लिहाज़ा इस से बचने की तरकीब यूं भी बनाई जा सकती है मसलन दर्जी वा'दा न करे बल्कि यूं कहे : “मेरा इरादा तो है कि कल तक कपड़े आप को दे दूँ, लेकिन वा'दा नहीं करता, हो सकता है इस में कोताही हो जाए।” या इस तरह के मोहतात जुम्ले बोल दे, सहीह उज़्र बता देने में भी कोई मुज़ाइफ़ा नहीं, इसी तरह जिन इस्लामी भाइयों का लैन दैन का काम है, उन्हें भी चाहिये किसी को कोई चीज़ पहुंचाने वगैरा का यक़ीनी वक़्त (Confirm Time) न दें। कोशिश कर के यूं तरकीब बनाएं, जैसे (अगर वाक़ेई इरादा है तो यूं कह सकते हैं) मेरा इरादा तो है कि मैं आप को वक़्त पर चीज़ दे दूँ या फुलां वक़्त तक पहुंचा दूँ, लेकिन अगर देर हो जाए तो मेहरबानी कर के नाराज़ न होना, फुलां वक़्त तक देने की उम्मीद भी है मगर वा'दा इस लिये नहीं करता कि कहीं गुनाहगार न हो जाऊं। येह तरीक़ा अपनाने से अगर एक आध गाहक टूट गया या किसी ने बुरा मनाया तो परेशान न हों। रिज़क़ **عَزَّوَجَلَّ** अता फ़रमाने वाला है और दिलों पर क़ब्ज़ा **عَزَّوَجَلَّ** का है, इस तरह हस्बे निय्यत व हस्बे हाल कोई न कोई बचत का पहलू रखना चाहिये ताकि गुनाह और रुस्वाई दोनों से बच सकें वरना बा'ज़ औकात बन्दा वा'दा वफ़ाई का दा'वा भी करता है लेकिन जब सुस्तियां और लापरवाहियां आड़े आती हैं या दीगर मजबूरियां और आ'ज़ार वा'दा पूरा करने में रुकावट बनते हैं तो फिर वा'दा ख़िलाफ़ी और उस पर शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ता है, लिहाज़ा अज़्म बिल ज़्म (बिल्कुल पुख़्ता

इरादा) के बजाए नेक निय्यती के साथ बचत का पहलू निकाल कर वा'दा ख़िलाफ़ी से बचते हुवे दुन्या व आख़िरत में अपने आप को रुस्वाई से महफूज़ रखने की कोशिश कीजिये ।

मेरी आदतें हों बेहतर, बनूं सुन्नतों का पैकर  
मुझे मुत्तक़ी बनाना मदनी मदीने वाले  
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

#### (4) यक़ीनी वक़्त न दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी से आइन्दा का मुआमला तै करते हुवे यक़ीनी वक़्त (Confirm Time) मत दीजिये, बल्कि यूं कह दिया जाए : “मैं तक़रीबन फुलां वक़्त तक पहुंचने की कोशिश करूंगा ।” हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : शहनशाहे खुश ख़िसाल, मक्की मदनी ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ किसी से वा'दा करते तो लफ़्जे “असा (या'नी शायद)” इस्ति'माल फ़रमाते ।<sup>(1)</sup>

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

#### जो मुयस्सर होता तनावुल फ़रमा लेते

खाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत ही प्यारी ने'मत है, इस में हमारे लिये तरह तरह की लज़्ज़त भी रखी गई है, अगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ खाना खाया जाए तो येह मुसलमान के लिये इबादत और जन्नत में दाख़िले का सबब बन सकता है । हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम

1 ... احیاء العلوم، کتاب افات اللسان، الاقة الثالثة عشرة، ۱۲/۳

रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के खाना तनावुल फ़रमाने का अन्दाज़ भी ख़ूब सूरत था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ खाने से मुताबिक़ घरवालों से फ़रमाइश न फ़रमाते बल्कि खाने में जो मुयस्सर होता तनावुल फ़रमा लेते, अगर कभी बासी खाना भी पेश किया जाता तो मुंह बसूरने के बजाए खुशी खुशी खा लेते, मुरग़न खानों से इजतिनाब फ़रमाते, सादा ग़िज़ा पसन्द फ़रमाते, मीठा रग़बत से तनावुल फ़रमाते ।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** खाने की लज़ीज़ ने'मत को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने का ज़रीआ बनाना चाहते हैं तो सुन्नत के मुताबिक़ खाने की निय्यत कर लीजिये । इस की बरकत से हमें पेट भरने के साथ साथ सवाब भी हासिल होगा । खाना खाने की कुछ सुन्नतें और आदाब मुलाहज़ा कीजिये :

(1) खाने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये कि इबादत पर कुव्वत हासिल करने के लिये खाऊंगा ।

(2) हर खाने से पहले अपने हाथ पहुंचों तक धो लीजिये यूं घर में बरकत होगी जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जो येह पसन्द करे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के घर में बरकत ज़ियादा करे तो उसे चाहिये कि जब खाना हाज़िर किया जाए तो वुजू करे और जब उठाया जाए तब भी वुजू करे ।”(1)

**हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इस हदीसे मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : इस (या'नी खाने के वुजू) के मा'ना हैं हाथ व मुंह की सफ़ाई करना कि हाथ धोना कुल्ली कर लेना ।(2)

1. . . . سنن ابن ماجه، كتاب الاطعمة، باب الوضوء عند الطعام، 4/2، حديث: 3210

2. ....मिरआतुल मनाज़ीह, 6/32

(3) उलटा पाउं बिछ कर और सीधा खड़ा रख के या सुरीन पर बैठ कर और दोनों घुटने खड़े रख के खाना तनावुल फ़रमाइये।<sup>(1)</sup>

(4) खाने से पहले जूते उतार लें। हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :  
“खाना खाने बैठो तो जूते उतार लो, इस में तुम्हारे लिये राहत है।”<sup>(2)</sup>

(5) खाने से पहले بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ लीजिये इस की बरकत से खाना शैतान से महफूज़ रहेगा चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :  
“जिस खाने पर بِسْمِ اللّٰهِ न पढ़ी जाए उस खाने को शैतान अपने लिये हलाल समझता है।”<sup>(3)</sup>

(6) अगर खाने के शुरूअ में بِسْمِ اللّٰهِ शरीफ़ पढ़ना भूल जाएं तो याद आने पर بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلُهُ وَاٰخِرُهُ पढ़ लीजिये जैसा कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “जब तुम में से कोई खाना खाए तो उसे चाहिये कि पहले بِसْمِ اللّٰهِ पढ़े। अगर शुरूअ में بِसْمِ ल्लह पढ़ना भूल जाए तो येह कहे بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلُهُ وَاٰخِرُهُ”<sup>(4)</sup>

①.....बहारे शरीअत, 16/378

② ... مشکاة المصابیح، کتاب الاطعمة، الفصل الثالث، ۲/۵۴، الحدیث: ۴۲۴۰

③ ... مسلم، کتاب الاشربة، باب آداب الطعام، الخ، ص ۱۱۶، حدیث ۲۰۱۷

④ ... ابو داؤد، کتاب الاطعمة، باب التسمية على الطعام، ۳/۸۷، حدیث: ۳۷۶۷

(7) खाने से पहले येह दुआ पढ़ ली जाए तो अगर खाने में ज़हर भी होगा तो **إِنْ شَاءَ اللهُ** असर नहीं करेगा :

بِسْمِ اللهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ

या'नी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के नाम से शुरू करता हूं जिस के नाम की बरकत से ज़मीनो आस्मान की कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती ।  
ऐ हमेशा से ज़िन्दा व काइम रहने वाले ।<sup>(1)</sup>

(8) सीधे हाथ से खाइये क्यूंकि उलटे हाथ से खाना शैतान का तरीका है । चुनान्चे, हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अज़मत निशान है : “जब तुम में से कोई खाना खाए तो सीधे हाथ से खाए और जब पिये तो सीधे हाथ से पिये कि शैतान उलटे हाथ से खाता पीता है ।”<sup>(2)</sup>

(9) अपने सामने से खाइये । हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : “हर शख्स बरतन की उसी जानिब से खाए जो उस के सामने हो ।”<sup>(3)</sup>

(10) खाने में किसी किस्म का ऐब मत लगाइये मसलन यूं मत बोलिये कि “मजेदार नहीं, कच्चा रह गया है, फीका रह गया ।” क्यूंकि खाने में ऐब निकालना मकरूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है । अगर जी चाहे तो खा लीजिये वरना हाथ रोक लीजिये जैसा कि हज़रते अबू हुरैरा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने कभी किसी खाने को ऐब नहीं

① ... فردوس الاخیان باب الباء، فصل فی الرقیة، ۲/۱، حدیث: ۱۹۵۵

② ... مسلم، کتاب الاشربة، باب آداب الطعام والشریب، ص ۱۱۷، حدیث: ۲۰۲۰

③ ... بخاری، کتاب الاطعمة، باب الاکل مما یلیه، ۵/۳، حدیث: ۵۳۷۷

लगाया (या'नी बुरा नहीं कहा) अगर ख़्वाहिश होती तो खा लेते और ख़्वाहिश न होती तो छोड़ देते।<sup>(1)</sup>

### अपने घर पर श्री ख़ाने को ऐब मत लगाइये

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : “ख़ाने में ऐब निकालना अपने घर पर भी न चाहिये, मकरूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है। (सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की) आदते करीमा येह थी कि पसन्द आया तो तनावुल फ़रमाया वरना नहीं और पराए घर ऐब निकालना तो (इस में) मुसलमानों की दिल शिकनी है और कमाले हिर्स व बे मुरुव्वती पर दलील है। “घी कम है” या “मज़े का नहीं” येह ऐब निकालना है और अगर कोई शै इसे मुज़िर (नुक़्सान देती) है, इसे न खाने के उज़्र के लिये इस का इज़हार किया न (कि) बतौरे ता'न व ऐब मसलन इस में मिर्च ज़ाइद है, मैं इतनी मिर्च का आदी नहीं तो येह ऐब निकालना नहीं और इतना भी (उस वक़्त है कि जब) बे तकल्लुफ़ी ख़ास की जगह हो और इस के सबब दा'वत कुनन्दा (या'नी मेज़बान) को और तकलीफ़ न करनी पड़े मसलन दो किस्म का सालन है, एक में मिर्च ज़ाइद है और येह आदी नहीं तो इसे न खाए और वज्ह पूछी जाए, बता दे। और अगर एक ही किस्म का खाना है, अब अगर (येह) नहीं खाता तो दा'वत कुनन्दा (या'नी मेज़बान) को इस के लिये कुछ और मंगवाना पड़ेगा, उसे नदामत होगी और तंगदस्त है तो तकलीफ़ होगी ऐसी हालत में मुरुव्वत येह है कि सब्र करे और खाए और अपनी अज़िय्यत ज़ाहिर न करे।<sup>(2)</sup>

1. . . . . بخاری، کتاب الاطعمه، باب ما عاب النبي طعاماً، ۳/ ۵۳۱، حدیث: ۵۴۰۹

2. ....फ़तावा रज़विय्या, 21/652

## बुजुर्गानि दीन का जिक्रे खैर

बुजुर्गानि दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى की सीरत हमारे लिये बाइसे बरकत और ज़रीअए नुज़ूले रहमत है क्योंकि इन की सीरत के वाकिआत और ज़बान से अदा होने वाले कलिमात हमारी निय्यत को पाकीज़ा रखने, आ'माल की इस्लाह करने और मुश्किलात और मुसीबत में साबित कदम रहने के लिये बहुत ही मुअस्सिर होते हैं। अस्लाफ़ की सीरत से हासिल होने वाले मदनी फूलों में वोह महक होती है जो न सिर्फ़ हमारी दुन्यवी ज़िन्दगी को खुशबूदार बना देती है बल्कि हमारी उखरवी ज़िन्दगी के लिये भी मुफ़ीद है। हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को भी कई बुजुर्गों की सोहबत पाने, उन के मल्फूज़ात सुनने और उन के मा'मूलात देखने की सआदत नसीब हुई थी लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जब भी गुफ़्तूगू फ़रमाते तो अपने हाफ़िज़े में महफूज़ उन बुजुर्गों के वाकिआत, मा'मूलात और मल्फूज़ात बयान फ़रमाते। आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान कादिरी बरकाती, अपने पीरो मुर्शिद ख़लीफ़ा व तल्मीज़े आ'ला हज़रत, शेर बेशए सुन्नत हज़रते अल्लामा मुहम्मद हशमत अली ख़ान रज़वी लखनवी और ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत कुतुबे मदीना हज़रते मौलाना मुहम्मद ज़ियाउद्दीन अहमद मदनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ عَلَيْهِمُ أَجْمَعِينَ का ज़िक्र कसरत से फ़रमाया करते।

## आ'ला हज़रत से वालिहाना महबबत

हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ से बे पनाह महबबत थी, हर साल उर्से रज़वी में हाज़िरी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

का मा'मूल था। इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का जिक्रे खैर आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ज़बान पर जारी रहता। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ज़ियादा तर इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के ना'तिया कलाम झूम झूम कर पढ़ा करते, खुसूसन इमामे अहले सुन्नत की येह ना'तें आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के ज़बान पर जारी रहतीं।

उन की महक ने दिल के गुन्चे खिला दिये हैं	जिस राह चल गए हैं कूचे बसा दिये हैं
जब आ गई हैं जोशे रहमत पे उन की आंखें	जलते बुझा दिये हैं रोते हंसा दिये हैं
इक दिल हमारा क्या है आज़ार इस का कितना	तुम ने तो चलते फिरते मुर्दे जिला दिये हैं
उन के निसार कोई कैसे ही रन्ज में हो	जब याद आ गए हैं सब ग़म भुला दिये हैं
हम से फ़क़ीर भी अब फेरी को उठते होंगे	अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिये हैं
असरा में गुज़रे जिस दम बेड़े पे कुदसियों के	होने लगी सलामी परचम झुका दिये हैं
आने दो या डुबो दो अब तो तुम्हारी जानिब	कशती तुम्हीं पे छोड़ी लंगर उठा दिये हैं
अल्लाह क्या जहन्म अब भी न सर्द होगा	रो रो के मुस्तफ़ा ने दरया बहा दिये हैं
मेरे करीम से गर क़त़रा किसी ने मांगा	दरया बहा दिये हैं दुरबे बहा दिये हैं

और जब नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुबारक औसाफ़ तसव्वुर में आने लगते तो इमामे अहले सुन्नत का येह कलाम पढ़ते :

वोह कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक्स जहां नहीं

येही फूल ख़ार से दूर है येही शम्भ है कि धुवां नहीं

और जब शफ़ाअते मुस्तफ़ा की अज़मत का ज़िक्र आता तो इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की येह ना'त पढ़ते :

क्या ही जौक अफ़ज़ा शफ़ाअत है तुम्हारी वाह वाह  
क़र्ज लेती है गुनह परहेज़गारी वाह वाह

### अमीरे अहले सुन्नत पर क़रम नवाज़ी

1399 हिजरी मुताबिक़ 1979 ईसवी जब शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه कोलम्बो तशरीफ़ ले गए तो ग्यारह रबीउस्सानी 1399 हिजरी, 10 मार्च 1979 ईसवी को हनफ़िय्या मेमन मस्जिद कोलम्बो सीलंका में नमाज़े ज़ोहर में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की मुलाक़ात हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि फ़तहपुरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ से हुई, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने एक माहिर जोहरी की तरह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه में पाए जाने वाले औसाफ़ को भांप लिया फिर जब ग्यारहवीं शरीफ़ की बड़ी रात महफ़िल सजी तो एक मरतबा फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ से आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुलाक़ात हुई, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से फ़रमाया : “येह रात बार बार नहीं मिलती, तरीक़त के हवाले से बड़ी अज़ीम रात है, मैं आप को सिलसिलए अलिय्या कादिरिय्या की ख़िलाफ़त देता हूं, मैं चूँकि सय्यिदी कुत़बे मदीना का वकील हूं इस की भी आप को इजाज़त देता हूं। सिलसिलए कादिरिय्या के इलावा दीगर सलासिल की जितनी भी मुझे इजाज़तें हासिल हैं वोह भी मैं ने आप को दीं।”

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के लिये ख़िलाफ़त जैसी अहम ज़िम्मेदारी गिरां बार थी लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने तमाम तफ़्सीलात से अपने पीरो मुर्शिद कुत़बे मदीना मौलाना ज़ियाउद्दीन अहमद मदनी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को आगाह करने के लिये एक मक्तूब तहरीर फ़रमाया। जब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ का मक्तूब बारगाहे मुर्शिद में पहुंचा तो कुत़बे मदीना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जवाबी मक्तूब में येह इरशाद फ़रमाया : “मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम साहिब ने तुम्हें जो ख़िलाफ़त दी है वोह दुरुस्त है, तुम्हारा दूसरों को बैअत करना भी दुरुस्त है, अगर तुम्हारे सिलसिले में कोई एक नेक मुरिद शामिल हो गया तो तुम्हारी नजात का ज़रीआ बन सकता है।”

### कुत़बे मदीना की आदते मुबारक

हुज़ूर मुफ़्तये आ 'जमे हिन्द हज़रते मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَن मदीना मुनव्वरा में हाज़िर थे, आप के मदीना शरीफ़ में होते हुवे एक शख़्स कुत़बे मदीना से बैअत होने के लिये हाज़िर हुवा तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उसे तम्बीह करते हुवे इरशाद फ़रमाया : शहनशाह की मौजूदगी में मुझ से तालिब हो रहा है ? फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उसे हुज़ूर मुफ़्तये आ 'जमे हिन्द رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से बैअत करवाया।<sup>(1)</sup>

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ में पीरो मुर्शिद का येह वस्फ़ ब ख़ूबी मौजूद था लिहाज़ा जब तक मेज़बाने मेहमानाने मदीना हज़रते कुत़बे मदीना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हयात थे, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ वकीले कुत़बे मदीना की हैसियत से मुसलमानों को अपने पीरो मुर्शिद का ही मुरिद बनाते थे। जब कुत़बे मदीना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ दुन्या से पर्दा फ़रमा गए

①.....तज़क़िए जमील, स. 223

तो आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने इस्लामी भाइयों के इसरार पर हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की दी हुई ख़िलाफ़त के ज़रीए बैअत होने की ख़्वाहिश रखने वालों को अपना मुरीद या'नी कादिरि अत्तारी बनाने का सिलसिला शुरू कर दिया। अमीरे अहले सुन्नत दَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ को अगर्चे दुन्याए इस्लाम के और भी कई अकाबिर उलमा व मशाइखे किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام से ख़िलाफ़त हासिल है। मसलन शारेहे बुख़ारी, फ़कीहे आ'जमे हिन्द मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी, मुफ़्तिये आ'जम पाकिस्तान हज़रते मुफ़्ती वकारुद्दीन कादिरि और जा नशीने कुतुबे मदीना हज़रते मौलाना फ़ज़लुर्रहमान कादिरि अशरफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने भी अपनी ख़िलाफ़त और हासिल शुदा असानीद व इजाज़ात से नवाज़ा है मगर अमीरे अहले सुन्नत दَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने चूँकि हज़रते मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की दी हुई ख़िलाफ़त के ज़रीए बैअत करने का सिलसिला शुरू फ़रमाया था इस लिये शजरए कादिरिय्या रज़विय्या अत्तारिय्या के अशआर के उस्लूब (या'नी पहले शे'र में उन का ज़िक्र है जिस ने ख़िलाफ़त दी और दूसरे में उन का जिसे ख़िलाफ़त मिली) को सामने रखते हुवे हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का ज़िक्र इस तरह है :

أَخِيْنَا فِي الدِّينِ وَالْ دُّنْيَا سَلَامٌ بِالسَّلَامِ

कादिरि अब्दुस्सलाम खुश अदा के वासिते

शे'र की वजाहत

या اَبُوَا ه عَزَّوَجَلَّ ! हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरि عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي के वासिते दीनो दुन्या में सलामती अता फ़रमा।

آمِينَ بِجَاءِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## हज़ की सअ़ादत

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को तीन मरतबा हज़ की सअ़ादत नसीब हुई ।

## निकाह व औलाद

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने दो निकाह फ़रमाए । आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के चार बेटियां और एक बेटे हैं ।

## कभी ख़िलाफ़े शरअ़ बात न देखी

आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के शागिर्द हज़रते मौलाना ख़लील अहमद क़ादिरि مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي का बयान है : उस्तादे मोहतरम हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम क़ादिरि رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ कुम्भि अयमा 1964 ईसवी में तशरीफ़ लाए । मैं तक़रीबन सात, आठ माह बा'द आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की बारगाह में तहसीले इल्म के लिये हाज़िर हो गया, आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के साथ सफ़र का भी मौक़अ़ मिला, मा'मूलात को क़रीब से देखने का मौक़अ़ मुयस्सर आया, आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के शबो रोज़ मेरी आंखों के सामने रहे اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की सोहबत में इतना तवील अ़र्सा गुज़ारने के बा वुजूद कभी कोई ख़िलाफ़े शरअ़ बात नहीं देखी ।

## विशाल

आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का विसाल 25 मुहर्मुल ह़राम 1419 हिजरी मुताबिक़ 21 मई 1998 ईसवी शबे जुमुअ़ा को हिजरी सिन के मुताबिक़ 75 साल 5 माह दस दिन की उम्र में हुवा ।

## शबे जुमुआ विशाल पर बिशारत

रोज़े जुमुआ या शबे जुमुआ वफ़ात पाने में अज़ाबे क़ब्र से नजात की बिशारत है चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : जो मुसलमान रोज़े जुमुआ या शबे जुमुआ वफ़ात पा जाए वोह क़ब्र की आजमाइश से महफूज़ रहेगा ।<sup>(1)</sup>

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## नमाज़े जनाज़ा

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की नमाज़े जनाज़ा हज़रते मौलाना हाफ़िज़ो क़ारी सग़ीर अहमद مَدِّ ظِلُّهُ الْعَالِي ने पढ़ाई और जुमुआ के दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की तदफ़ीन हुई ।

## वुजूदे मसऊद की बरकतें आज तक मौजूद हैं

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के मुबारक क़दम इस अ़लाके में तो क्या पड़े, अ़लाके में रहने वालों की किस्मत जाग उठी, इस अ़लाके को आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की सूरत में दिल फ़रेब अन्दाज़े तदरीस वाला मुदर्रिस, मिलनसार इमाम, शरई रहनुमाई करने वाला आलिमे दीन और मुश्किल के वक़्त ख़ैरख़्वाही फ़रमाने वाला वलिये कामिल मुयस्सर आ गया । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की दीनी ख़िदमात का समरा उलमा व हुप्फ़ाज़ की सूरत में नज़र आता

1. . . . . तرمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فیمن مات یوم الجمعة، ۳۳۹/۲، حدیث: ۱۰۶۰

है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का मज़ारे पुर अन्वार मौज़ए कुम्भि अयमा तहसील लालगंज (ज़िल्अ प्रताप गढ़, हिन्द) के क़ब्रिस्तान में है।

اَللّٰهُمَّ عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो। آمينُ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

### हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरी रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ तारीख़ के आईने में

15 शा'बान 1343 हिजरी / 11 मार्च 1925 ईसवी	हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की विलादत हुई
1371 हिजरी / 1952 ईसवी	हुसूले इल्मे दीन के लिये कानपुर और जोनपुर का सफ़र और दर्सियात की तक्मील
7 रजब 1363 हिजरी / 29 जून 1944 ईसवी	अहसनुल उलमा से इजाज़त व ख़िलाफ़त
1384 हिजरी / 1964 ईसवी	अहसनुल उलमा के हुकम पर खटमन्दू से कुम्भि अयमा तशरीफ़ आवरी
1397 हिजरी / 1977 ईसवी	आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने पहला हज़ फ़रमाया
1397 हिजरी / 1977 ईसवी	कुतुबे मदीना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने ख़िलाफ़त अता फ़रमाई
1399 हिजरी / 1979 ईसवी	कोलम्बो का सफ़र
1399 हिजरी / 1979 ईसवी	कोलम्बो में अमीरे अहले सुन्नत وामत برکاتهمुल्लाह को ख़िलाफ़त अता फ़रमाई
25 मुहर्रमुल ह़राम 1419 हिजरी / 21 मई 1998 ईसवी	आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने विसाल फ़रमाया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते मौलाना मुहम्मद अब्दुस्सलाम कादिरी रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की सीरत की इन तारीख़ों को दस्तयाब मा'लूमात और शवाहिद की मदद से मुरत्तब किया गया है, जिन वाक्फ़ात की कोई तारीख़ या सिन मुतअय्यन नहीं की जा सकी वोह इस में शामिल नहीं।

## ماخذ و مراجع

کتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی	اقتضاء العلم العمل	المکتب الاسلامی بیروت، ۱۴۰۲ھ
دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۹ھ	جامع بیان العلم	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۸ھ
دار الفکر بیروت، ۱۴۱۹ھ	مکاشفۃ القلوب	دار الکتب العلمیہ بیروت
دار الفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ	احیاء العلوم	دار صادر بیروت، ۲۰۰۰ء
دار احیاء التراث العربی بیروت، ۱۴۲۲ھ	مرآۃ المناجیح	ضیاء القرآن، مرکز الادبیات لاہور
المکتب الاسلامی بیروت، ۱۴۰۲ھ	فتاویٰ رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الادبیات لاہور
دار الفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ	تذکرہ جمیل	مکتبہ برکات المدینہ، ۲۰۱۲ھ
دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۶ھ	حیات حافظ ملت	المجمع الاسلامی مبارک پور ہند
دار الفکر بیروت، ۱۴۲۶ھ	مفتی اعظم ہند اور ان کے خلفاء	رضا اکیڈمی ممبئی، ۱۹۹۰ء
دار المعرفۃ بیروت، ۱۴۲۰ھ	سوانح شیریشہ سنت	نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی لاہور، ۱۴۳۲ھ
دار احیاء التراث العربی بیروت، ۱۴۲۱ھ	تذکرہ خلفائے اعلیٰ حضرت	ادارۃ تحقیقات امام احمد رضا کراچی، ۱۴۱۳ھ
دار الفکر بیروت، ۱۴۱۸ھ	تذکرہ علمائے اہلسنت	سنی دارالاشاعت، فیصل آباد، ۱۹۹۲ء
دار الفکر بیروت، ۱۴۲۱ھ	سیدین نمبر ماہنامہ اشرفیہ	ماہنامہ اشرفیہ مبارک پور، ۲۰۰۲ء
دار البصرۃ مصر	سیدی قطب مدینہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
دار الوطن ریاض، ۱۴۱۸ھ	سیدی ضیاء الدین احمد القادری	حزب القادریہ لاہور، ۱۴۲۶ھ
دار الفکر بیروت	حیات محدث اعظم	رضا فاؤنڈیشن لاہور، ۱۴۲۵ھ
دار الفکر بیروت، ۱۳۹۹ھ	مدنی پنجسورہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۸ھ		

## फेहरिश

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
दुरुद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	अहसनुल उलमा की दो नसीहतें	16
उम्मत की ख़ैरख़्वाही में मसरूफ़	1	हुलया मुबारक	17
नाम व नसब	2	लिबास मुबारक	17
ता'लीमो तरबियत	3	इजाज़त व ख़िलाफ़त	18
(1) मुफ़्ती रफ़ाक़त हुसैन कादिरि अशरफ़ी	4	(1) शेर बेशाए सुन्नत हज़रते अल्लामा मुहम्मद	
(2) शेर बेशाए सुन्नत हज़रते अल्लामा मुहम्मद		हशमत अली ख़ां	18
हशमत अली ख़ां	6	(2) मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द हज़रते अल्लामा	
आ'ला हज़रत की खुसूसी करम नवाज़ी	6	मुफ़्ती मुस्तफ़ा रज़ा ख़ां	19
शेर बेशाए सुन्नत की ख़िदमत में	7	(3) अहसनुल उलमा हज़रते मौलाना सय्यिद	
(3) मुफ़्ती काज़ी शम्सुद्दीन अहमद जोनपुरी	8	मुस्तफ़ा हैदर हसन मियां कादिरि	21
क़मर रज़ा की खुश अदाएं	9	(4) कुतुबे मदीना हज़रते मौलाना ज़ियाउद्दीन	
(1) मियाना रवी	10	अहमद कादिरि	25
(2) नज़्मो ज़व्	10	ख़िदमात	26
(3) अज़्म व हौसला	12	बद मज़हबों को सख़्त ना पसन्द फ़रमाते	27
(4) क़नाअत	12	आयते मुबारका तक न सुनी	27
(5) मशक्क़त	13	बद मज़हब की सोहबत बाइसे हलाक़त है	29
(6) इख़्लास	13	सब्रो इस्तिक़्ामत के पैकर बने रहे	29
(7) बुर्दबारी और तहम्मूल मिज़ाजी	13	इख़्लास का पैकर इमाम	31
(8) ज़ाहिरी व बातिनी सुथरापन	14	कभी दिल आज़री नहीं की	31
(9) पुर सुकून मिज़ाज	14	जिस से मिलते दिल जीत लेते	32
(10) आजिजी व इन्क़िसारी	14	बारहवीं और ग्यारहवीं मनाने का अन्दाज़	32
(11) खुश कलामी	15	दिन भर के अहम तरीन मा'मूलात	32
(12) इताअते शैख़े तरीक़त	16	ज़िक्कुल्लाह का मा'मूल	33



उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी का मा'मूल	34	वा'दा कैसे निभाएं ?	56
ख़त्मे कादिरिय्या शरीफ़ का मा'मूल	35	(1) वा'दा पूरा करने के फ़ज़ाइल पेशे नज़र	
ख़त्मे कादिरिय्या पढ़ने का तरीक़ा	35	रखिये	56
ना'त ख़्वानी का मा'मूल	38	(2) वा'दा ख़िलाफ़ी के दुन्यवी व उख़रवी	
मुतालाए का मा'मूल	38	नुक्सानात पर ग़ौर कीजिये	56
वज़ाइफ़ पर मुश्तमिल रिसाला तहरीर फ़रमाया	41	(3) वा'दा ख़िलाफ़ी से बचने के लिये मोहतात	
निस्बत से महब्बत	41	जुम्ले बोलिये	57
शरई मसाइल के सिलसिले में लोगों का रुजूअ	42	(4) यक़ीनी वक़्त न दीजिये	58
बारिश बरसने लगी	43	जो मुयस्सर होता तनावुल फ़रमा लेते	58
अगर कोई ज़रूरत मन्द आता....	43	अपने घर पर भी खाने को ऐब मत लगाइये	62
एक के बजाए दो ले लीजिये	44	बुजुगाने दीन का ज़िक़्रे ख़ैर	63
हाज़तें पूरी कीजिये	45	आ'ला हज़रत से वालिहाना महब्बत	63
काबिले ता'रीफ़ शख़्सियत	46	अमीरे अहले सुन्नत पर करम नवाज़ी	65
तदरीस भी फ़रमाते	47	कुतबे मदीना की आदते मुबारका	66
हिन्द के मुख़लिफ़ शहरों में सफ़र	48	शे'र की वज़ाहत	67
तरावीह पढ़ाने के लिये बैरुने मुल्क सफ़र	48	हज़ की सआदत	68
तीन तीन घन्टे बयान फ़रमाते	48	निकाह व औलाद	68
नमाज़े बा जमाअत से महब्बत	49	कभी ख़िलाफ़े शरअ बात न देखी	68
अगर जमाअत फ़ात हो जाने का नुक्सान		विसाल	68
जान लेता तो	49	शबे जुमुआ विसाल पर बिशारत	69
मस्जिद भरो तहरीक	51	नमाज़े जनाज़ा	69
वा'दा पूरा फ़रमाते	52	वुजूदे मसऊद की बरकतें आज तक मौजूद हैं	69
अगर वा'दा पूरा न कर सका तो....	53	तारीख़ के आईने में	70
जन्नत की ज़मानत	53	माख़ज़ो मराजेअ	71
वा'दा किसे कहते हैं ?	54	फ़ेहरिस्त	72



दौराने मुतालआ जरूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इल्म में तरक्की होगी ।

[illegible]

## नेक नमाजी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा 'द नमाजे मगरिब आप के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❀ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी काफ़िले में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❀ रोज़ाना “फ़िक्रे मदीना” के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये।

**मेश मदनी मक्शद :** “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।” إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह के लिये “मदनी इन्आमात” पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये “मदनी काफ़िलों” में सफ़र करना है। إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ



ISBN 978-969-631-784-5



0125519



## मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- ❀ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- ❀ अहमदाबाद :- फैज़ाने मदीना, ग्रीकोनिया बगीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- ❀ मुम्बई :- फैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- ❀ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E-mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net